স্ত্ৰীবিশ্বৰূপিণী নামক

নাটক।

ঞ্ভিন্থ সুর দারা

জ্বীত।

জ্রীয়ুত্র (মচ্ছ্র ভট্টাচার্য বর্ত্ক সংশোধিত হইলা

ক্লিক্'ত

হিন্দু প্রেসে মুদ্রিত।
আহিরীটোলা ১২ নং বাসী।
সন ১২৭৪ সাল ২৫ জৈছি।

মুলা ५० আনা মাত।

স্ত্ৰীবিশ্বৰূপিণী নামক

নাটক ৷

সমস্ত রাজগুণশালী ফরাসিস অধিপতির অধীনস্থ সহর
চন্দননগর বাহার দিওীয় নাম ফরাসডাঙ্গা তদন্ত:পাতি সংকীর্তনের বাগান বাহার অন্য নাম
নাডুয়া তত্র নিবাসী ভূতনাথ সুর বাহার
আর নাম ক্রুদাস সুর ডাক্তার ভদ্বারা
বিরচিত হইরা নব গ্রাম নিবাসী শ্রীল
শ্রীযুক্ত রামচন্দ্র ভট্টাচার্য্য কর্তৃক
সংশোধিত হইল।

কলিকাতা

হিন্দু প্রেসে মুদ্রিত।
আহিরীটোলা ১২ নং বাটা।
সূদ ১২৭৪ সাল ২৫ জৈছি।

N.S.B.

Acc. No. 8548

Date 27, 4, 94

Lem No B/B440H

Dob. by

স্চীপত্র। ——

নিৰ্ঘণ্ট			পত্রাস্ক।	
			•••	5
ভাগ প্রার্থ্		•••	•••	Σ,
 সাধুর মনকে প্রবেশি 			•••	•
" সাধু পত্নীর উজি	• . •		•••	5 9
· সাধুর উক্তি	•••			- C
· সাধু পত্নার উ ত্তি	•••	•••	•••	>b
· রম্বীকে জগদ্ধপে	वर्गमा	•••	•••	
" সপ্তদীপা ক্ষিতি বং	ia)		,	28
· अश वर्गमा		•••	•••	c:
· তেজঃ বৰ্ণনা	***	•••	•••	२०
· মুকুদ্বৰ্ণনা		•••	4**	২ ১
•			***	える
ণ বেলাম বর্ণনা জন্ম ক্রিনা	जलंडां			ই
" নক্ষতাদি শুরুপক্	य-(का	***	***	z r
'' ক্লঞপক্ষ বৰ্ণনা	••• 1 ⊃x √è		•••	રવ
" নবগ্ৰহ ও হাদশ র	ामा वन्त्र प्रभावन्त्र	•••		ತಂ
'' ষড়গড়ু বর্ণা প্রথ	ম আমোৰণৰ	•••		ં
বর্ষাঝারু বর্ণনা	• • •	•••		•
<্ শরদূতু বর্ণনা		•••	•••	98
< শিশির ঋতু বর্ণন	1	•••	•••	وی
" হিমল্ল ঋতু বৰ্ণনা	•••			≎;
" বসন্ত ঋতু বৰ্ণনা	•••	•••	•••	ತಿ

46	প্রথম মনুজ বা জরায়ু	জ বৰ্ণনা	•••	• (၉၁
46	দ্বিতীয় অগুজ বর্ণনা		•••	•••	8∢
46	ভূতীয় সেদজ বর্ণনা		•••	•••	89
	•		***		84
	চতুৰ্থ উদ্ভিচ্ছ বৰ্ণনা	•.	*44	•••	۵٦
46	সাধু পত্নীর উক্তি "		•••	•••	8
"	সভীর প্রশ্ন পতির		== == 1	•••	49
46	जनमेश्रत উদ্দেশে न		a. a.	į	a.p.
46	344164 4144 116	क्रटल वगना		ł	98
46	क्रुश्चकां नी नर्गना	. • • •	, • •		-
<6	প্ৰভাত বৰ্ণনা		•••	•••	<i>હહ</i>
44	নাটক আরদ্ধ	•••	•••	***	R
6	' ছুই প্রছর বর্ণনা	•••	•••		94
•	' देवकान वर्गमा	•••	***	••••	ÞS
4	' मक्ता वर्गमा	•••	•••	•••	₽8
•	⁶⁶ প্রম হংসের বক্ত	ভ		•••	P3

পুচীপত্র সমাঞ্চঃ।

জ্রী বিশ্বরপিণী নাল্লি এই অভিনৰ প্রস্থানি গদা পদ্য ছाम विमाल इदेश शांठिक मधलि मामा आर्थमा करिएटाइ. যে তাঁছারা ঐ প্রয়েনেত্র বিনিক্ষেপ পুরঃমর দোৰ ভাগে সভৎপর হইয়া উহাকে পৰিত্র করিছে মহুযুক্ত হয়েন ! ম্পিচ রাথা থানি, কোন গুণেই গুণনীয় নছে ভত্তাচ গুংনীয় গুণিরণ সভবে এই নিগুণের গুণে বাধিত হইয়া একবার ভারাপান্ত অধ্যয়ন করিবেন। মহাশয়ের মহতি গুণ গাই গ্রন্থ সকল পাঠ বরেন বলিয়া যে ক্ষুদ্র লিপি পাঁতি কয়ে-कृष्टि शास्त्रिंशियांत्री नरह, हेहा विस्तृहमा कृष्टितम नही জীনদের নন্ন যিনি বাস্তুদের, তিনি গোকুলে ক্ষীর হর ছালা নবনী খাইয়াও বিজ্যের ভণ্ডুল কণায় পরিভূপ্ত হইয়া-ছিলেন। প্রবহ নাম ধারণ করিলে স্কল গ্রুই স্কন করিতে হয়। যদ্রপ শাক্ষি পাঁচুমাদি আছার করিচাও কেছ কেছ শাক পাটিকাকৈ ধন্যপাদ ক্ষিয়া থাকেন। ভিজ্ঞা তান্তে সহস্রাহ্য বলার নাথ্য আমার এটা বচনা থানি পাঠিত नार्ट्ड अवाख्या क्रेस्ट्रिंग्डिं। এই अलुथ्यान कौना राज्य বিচিত্র ক্ষেক্টি পত্র যাত্র এতভিত্র আরু কিছুই লাই : পরি ইছাতে অনা কোন কিছু পাটবার ইচ্ছা করেন, ভাবে আ উজবুক বাবুং উত্তর নারে। অগ্রন্ত ছটার। কৌন উছস্ত **বারু নৃত্তন কলিকাভার আ**হিম্ম সেমক হালে একটা ও ল কপি ক্রের করিয়া জ্রমণ ভাষার পত্ত সকল থসাইতে ধসা-ইতে তাল কপি নিশেষিত হইলে, তিনি সক্রোধে ভৃত্যুকে কহিলেন যে, সকলি পাতা এর তাল কইরে বোকা ইত্যাদি আমার এক্সকথা কি বলিব জগদীশ্বরের কফণা জ্যোতি ব্যতীত পৃথিবীতে কোম বস্তু ও নির্মান নছে, ও লোকের অপ্রির ও ন**ে। নিষ্পত্র তিত ছইয়াও জনগণের আ**ছি^{াগ্}য পটন লভা ভিত্তাক্ত হইলেও পিত্ত ভ্যক্ত নামে ব্যক্ত, আত্রক বালি ছইয়াও লোকের প্রিয়, লহা ডহা মারা বালেও শিশকায় ব্যক্তি বৃহহের মনঃ রঞ্জন করিতেছে, লবঙ্গ ভীত্র ষাল তবু মুখের তবুল সায়ী, খদির তিক্ত বলিয়াকে তাক্ত, প্রম কণ্ঠকী হইয়াও মধুর, আতাটক রস হইয়াও মধুফল নামে বিখ্যাত, মধুর আনারসে ও কর পত্র, রভাকর সমু-(प्रत जल लवनांचान, गन्नारमधी-विदिध महलांग्र मलिना इहे-মাও পতিত পাবনী নামে বিশ্ব শোভা করিয়াছেন, সরো-বর জুদ্র হইয়াও ভদ্রগণের ভদ্র, সরোজিনী কণ্টক মূণালা হইয়াও সুর্বার ভার্যা কনকী গোলাপ ও সালাপ যোগ্য ন্ৎসাও স্কান্সারত, নিউটেরও পতঙ্গ পাথা পিপীলিকা भाम, हस्त मूर्ग छ हाइ अख, बिटरत छ मीलकर्छ, इतित अमस শ্যা। এইরণ পৃথিধীক সমস্তই কুনির্মাল নছে। কিন্তু ধেমন কুলি যন্ত্রে ভিষ্যাক দাক স্বচাক ভাল্লাভ করে, ধেনন कुर्लिश्रेरक मांगा मकल विमल दृश धारण करत, (यमन महाल মূবে মঙল মুদ্ধ বিজল রূপ প্রবেশ করে, দেনত অগ্নিছ अञ्चात खोत मनी गृर्खि मुक्त इहेश अधि तरल रनाठा करत, তেন্ত শ্রীং, স্কল দ্লদ ভাবে স্মৃত্ত ভইয়া সমুদ্র রংগ

ত্তিতি করে, তত্ত্বপ মংকৃত এই সামান্য পুত্তকথানি মহাত্মা সংহালয় মণ্ডলী মধ্যে উলিভ মাত্র লোধিত হইয়া বিমলা লাম ধারণ করুক, কিমধিকং জল্পদেনেতি। আমার ইচ্ছা ছিল যে এ যাত্রা ভূমিকা লিখেই কালযাপন করিব, কিন্তু পোড়া বিধাতা আমাকে সে সুথে বঞ্চনা করিল, শোকে তাপে জুর खुत कारण कारण है जूमिका लिथा वक्क कतिराज इहेल। प्रिथि ষদি কিছুকাল কিকির করে বাঁচিতে পারি তবে লীবনা-বধি কেবল ভূমিকাই লিথিব আর কোন কর্ম করিব না। মায়াপুরের হাট হইতে এক দল যাত্রা, রাজা বাহাতুরের বাটীতে কলহরি পুজার ধারা করিতে আসিয়াছিল, আছা তाहाता माधु बनिताह है है , खोहाता मृत मन्गानतन अखि মনঃযোগী, তাছাদের মুরের উপর এরপ বত্ন যে রাত্র ১ নয় ঘটিকার সময় সূর প্রস্তুত করিতে আরিক্ক করিয়া পর দিন স্ত্ৰাং অংধি ও একভান মনে সুৱ ব্যক্তন অভাস্তোদোগী ছিল, কিন্তু পোড়া লোকেই কেবল বাত্রা ছলোনা বাত্রা হলোনা বলিয়া গৌলমাল ক্রিয়া ভাছাদিনের উৎসাহ ভত্ন করিয়া দিল। স্থানি সেই ভয় প্রযুক্ত ভূমিকা লেখা কান্ত ভইরা পুত্তক রচিতে নিযুক্ত হইলাম। আমাদের পড়োর হরিহর মিত্র বলিতেন, লিখিতে তো সবাই জানে, কাগজ ট্লো কালিকরা কলন কাটাইত কাল, কিনু পরামানিক (श्रीदित कुरे मांत्र शूर्व थूर मानिहा अमनम् र्श्वीदि करिए ह নাকে কান্দিত। তা মহাগ্যেরা গোলাকে কি খলিব সকলি इश्मीक्टात इंग्हा।

अभिजानिश्वार नमः।

(हिशमी।

ज्ञा डिक्रम शक्रम, नमः नमः निर्माक्षने. বিশ্ব মানস রঞ্জন, তব নাম জাচায় জাচায়। গুণ হীন কত কৰ. গুণাতীত জগ তব, বেদেতে বিদিত সব, ষডচক্রে বাচার বাচায়। এনাম হোজিড গীত. শ্ৰুৰতে প্ৰম পিত. পাঠে চিত ছর্ষিত, করিবারে নাচায় নাচায়। कूत्रांचा मस्तित तथा, क्लांत मम शरथ शरथ, আশায় লইতে সাথে, কত্মতে নাচায় নাচায়। वाद्यक मा छ। दव मतम, मिळात इत्व त्कमतम, भागि श्राप्त मर्ककरण, जरम जम बीहात बीहात । আমি বাহা বলি প্রভু, ভাহা নাহি শুনে কভু, নিশুনিকা অরু তরু, পড়াতেছি ধাঁচার দাঁচার ॥ আশু শিকা শিশুবোষ, পড়াইতে অসুয়োধ, করি তবু নাছি বোগ, বুঝি সব কাঁচায়ং। পাকিলে পাকিৰে আসু, পাকে গেয়ো পাকে কাঁস, शांकित्व वा क्वांटव वांत्र, ट्रिक्टीमांख काँ हात्तर । ভুলিয়ে ভোষার নাম, কেহ ক্লড় কেছ রাম, **क्हि कोली किह** भागि, এই वर्त (हँ हो छूर। মতান্ত্র দতে দতে, ममन शोवर्थ गर्थ. কালের করাল দত্তে, বুনাি মুগু ছেঁা গ্রহ। জ্ঞান-রুকে নাছি ফল, মূল গেল রুসাতল, विषय वांत्रमा वल, दिव वांति (इँ हांत (इँ हांत । इतिरत (क्मम गाति, उँ। हारत कि निरंद छोति. मध द्वित मिरत गांति, मह चिट्टे दर्शत्र ।

গ্রন্থ কর্ত্তার থেদ। পরার।

ভূতনাথ বলে এহে इक्षनाम ভাই। ন্ত্ৰী বিশ্বরূপিণী, আমি মনঃ বলে পাই। সতীত্ব সুধাসিদ্ধুর জন্ম, সেই স্থানে। भी हालि डेरिय़ हिल बधा बालाकारन সেই বলে থাকি বটে কিন্তু বন্য নয়। জ্বন্য ভাগণ্য কেছ ধন্য নাছি কয় # भाकाली भकाली खांत भारत नृत्ते भाता। সতীত্ব স্থাসিজু ও সেই রূপ প্রার 🛭 যুক্তাভিতাৰ্থি মুক্তা নাহি এসে পাল। মুক্তাকর্তা মুক্তা লোবে মুক্তা করে প্রাস । তেনে কুটে মরি কিন্তু আসলে না রই। চিনির বলদ প্রার অকাতরে বই ॥ দেখ হে বাছবধণ কড জালা সই। ষার ধন তার নহে নেতো মারে দই। প্রসব হইতে মাতা কত কফ পার। অন্ন প্রাসদেতে সবে লুচি সতা খার ৷ **अहे (य कथांत्र वरन जमा निरम हाँमा।** হাস্তমুখে ডিন ধার পিভাবর চাসা 🛭 ভপস্ঠার ভগীরধ ভাগিরধী পার। অন্তরে বাজারে ঘণ্টা দেশে লরে বার ।

গ্রন্থ বিদ্য

(मर्थ श्रुटम मर्म छर्ग कतिनाम श्रित । सी विश्वक्रिंभिनी क्रिल इंडिनाम जीत ॥ মুদ্রান্ধিত আমা তিন্ন অন্য যদি করে। দণ্ডেতে দণ্ডিত হবে রাজার বিচারে । বাপের না থাকে ঠিক কাপের মতন। মন্মান্তিক এই কর্মে তাহার ষতন। ক্লভাঞ্জলি করপুটে করি নিবেদন। পাঠক মগুলিগণ করছ এবণ॥ সতীত্ব সুধাসিন্ধরে হেরে পুনর্কার। পরিবর্ত্ত করে দিব দৃস্য অলকার । গীত সহ প্ৰীত ভাবে হইবে প্ৰকাশ। পুরাইবে অভিমব রূপে অভিলাস 🛭 স্ত্রী বিশ্বরূপিণী যদি হয় আদরিণী। लक्की अब्रुख जी करिंग विश्वरव (यहिनी ॥ ভূতনাথ রূপে আছি বৈদ্যনাথ আদে। त्रोमकृष्ध विन वर्षम कृष्णमान ভাবে।

धाक्कारतत रथन ममाश्वः।

শুদ্ধিপত্র।

পত্ৰ	পংক্তি	পশুদ্ধ	শুদ্ধ
2	Y	इ ल	देहन
	>	ट्य शेम त्र ख	পদর্জ
29	5	চাকা	চাকো
೨	₹8	সাস্থরী	সাম্বরী
98	>	সহিত	সহিতে
3 6	২8	नीलांचरत्र	मीनांचरत
3 9	¢	निगीलिन	নি শী লি ত
8•	:5	শ্ রিভা	ৰক্লিক 1
80	9	হেরি ত	হে রি
۵	5	করবী	क्यत्री
ঐ	>8	প্রিয়	প্রিয়ে
5 0	٦	মুখ	म्थ
৬৯	હ	अभो निन	সমাসীম
9 t	Æ	ক্রতে	क्टमटङ
95	ર	এ অখ্ন্য	(२ अधना
95	7	পর	পশ্ন
99	8	बर्टक	व्यटिका
96	ર	ভালার	माममात्र
10	>8	তুৰি	তুৰি

শুদ্ধিপত্র।

₩ 8	ર૭	প বন	পরম
⊌ ₹	`	मा	मांगी कहिएउए
7	· ·		পদ্মিনীর প্রেমের
			দায়েই পলায়ন
			করিতেছে তা
			আবার পদ্মিনী
			क (मिथिद कि।
		494	मर्भ
. જે . જે	9 -	मर्श	पृश्

গ্রহারম।

कान भृशे वास्ति, अधार्तन इत्त करम ক্রমে পুরাণাদি বিবিধ শান্তের অভিক্র ও তন্ত্র প্রভৃতি শিবসঙ্গীত, বৈশেষিকাদি মীমাংসা এবং अञ्चि म्ब जि दिना विकित इहेशी, नर्सना गांधू-नक्रांभारत्र मसुद्धे गांनरम आस्त्रानित हिर्मन। शहर একদা তাঁহার অদরাকাশে, ভাত কুতাত সম, ছ-कांख ताथ सूर्यात क्षत्रं वीर्या विक्रित इस्त्रात তাহার অবঃকরণ অফিনী প্রক্ষুটিতা হইল। ত দারা তদীর জান অমর অমপর স্বতন্ত্র পুরংসর वकरमवाषिकीतः इंड्यानि वालि विख्यकि शूर्मक প্রম প্রাথপর প্রমানার, স্বীরাঝা সম্প্রদান করত দারা পুত্র ও অপরাপর অবগণের প্রতি ভিন্ন ভিন্ন বেং ভিন্নভাবে অমৃতাক্ষাদিত বিৰ্থাশি সদুশ चनात नश्नादात नमस चास्त्रात्र नितस स्ट्रेश मनटक বজ্ঞপ শিক্ষা হাল করিচেচ্ছেন ভাহা পরার এবছে निशि वह रहेन।

প্যার!

अम (त अर्थाध मनः, ध्वर्याध, वहम। মারা-ঘোরে কারে কর, আপন জাপন। मकरल मध्य करत, जाशन जाशन। আপন ইচ্ছায় ভাবে, আপন আপন। আপণে আপন বুদ্ধে, সবাই আপন। আপণ ভালিলে সব, আপন আপন॥ क्रिजांतरन वरत जागा, मिजिंतिकः भन । विस्कृत्य वरम जाकि, नाहि इस श्व ॥ (व मूरलात क्रतापि मा, रहेल खर्गन। (क जात्न (क श्रंत जोई, जाकां ज चर्नन ॥ माम ट्लामा जना स्टब, क्रिट्ट लाज्म। उथम (त यान यान, भे हिवि भी फुम ॥ এই রূপ ভবহাটে, তব কেবা আছে। विक्रम रहेटल कांग्र, कांग्र शादि कारह कृष्ट्रे बाह्य किया, किया मात्रा श्रम পীর নেত্র ছির হলে, রবে ভারা হত্ত। मृजाकात मृजिकात, कतिएव मतन। দৃষ্টিতে অক্স হবে, থাকিতে নয়ন। **চরণ शांकिए महि, १६८व गमम**। रात्र अर्गभक्ति, गुहिरर, खेरम । त्र कर्त मनक भवा, कविक अस्त्र त कर्ण त्वरवत्र मान, रूदन ना व्यवश्र 1

त्व यूर्थ मर्कता स्त्र, भाजानि क्विज्य । त्महेकात्म अहे मूच, इहेरवदा मूक । क्का ह्या लंक श्या, इंडामि नंदन। जाजिया मस्ति जिस्ती, एईरव काव्य ॥ जाकूशन धर्मात्रन, इत्व कि उथम। जाहूजत आने राहु, नजाल वस्त्र । कारलत कताल मूर्थ, इंडेरल करन धम मनः शतिजन, जधन (क वन । অতএব এই বেলা, কররে সবল। (रामा नाहे (रामा नाहे, तकनी खरहा। कानतीय रहेन त्त्र, राति अवनीत। जानका दिना जीर, इदि जडाकाना क्षक मरन कर वार्तरम, एक मानजन कि कब कि कब खात, जांचा जुलांचन । वैष्टित हेन्द्र। तथा मा अ अ मरमात । रुज्य भाजन लग्न इत्र व्यनिवात । সভা ভৰে মত হও; বৃচিবে হভান্ত। **४ तरम शहम शह, शहिरत निर्णेख** ह

नमा। दश्यामः त्यारे निक्तः विष्ठतः विक्त विश्वानकि विक्तिकोकः स्विधिकाः, स्वश्वाद्यानि तम् रहणः सरकाकारणः स्वविद्यादश्यापनसम् कर्षः। स्वा दश्यः विवासिकिकेष्ठः, रहणान् करणः कारण्यु द জলবিষের ন্যার, নাশকে আত্তর করিবে, তাহার কিছু মাত্র নিশ্চরতা নাই।

ভথাচোক্তং ৷

পথিত কৰ্তৃক কথিত

লোকঃ। আয়ুঃ পল্লৰ লোলাগ্ৰন্থায়ু কণভঙ্গুরং।

উন্মন্তমিব সংভ্যন্তা যাত্যকাণ্ডে শরীরক।।

জন্যার্থ। আয়ু পত্তের চঞ্চল অত্যে লয়মান জলের ন্যায় ক্ষণ ডলুর হয় ও উন্মত্তের ন্যায় অকালে শরীর ড্যাগ্ন করিয়া গমন করে।

গদা। অতএব হে মনং! এই জায়ুর আহা।
পরিত্যাগ পূর্মক সেই চিদামার আমার্লণ করহ।
অর্থাৎ সেই প্রজাতত্ত্ব প্রবর্ত হইবার অমুর্তান করহ।
এবং ভূরোজুরঃ জন্ম মরণ পরিহারার্থে এই জ্রম
রপ জগৎকে বিশ্ব ভ হও। এবিদ্ধি বিবিধাপদেশে সেই নাধু, চিততেত্ত্বি করিরা জগতিশারণ
হওত ভূতিশ্বিত হইলেন। তদনত্তর ঐ মহামার
সহধ্যিণী, সংসার ব্যাপার নির্মাহ করত, স্থামীকে
ভক্রপ বিলোকন মাত্রে বিশ্বরাহিতা হইরা এক
ভূতে্তি নিরীক্ষণ ও নাম্যবিধ ভিতার প্রলোজনিবেশ
পূর্মক কণকাল বিলবে বেমন স্থুপারীনিধের

মনবধু উতলা শীল, কমল কলিকা গর্ভন্থ জনক কাপ সৌগন্ধি, প্রক্ষুটিত ক্রমে, ক্রমে ক্রমে বিনিঃ-সূত হয় তজ্ঞাপ ঐ পতি মনোমোহিনী মহিলার কমলানন হইতে অমৃত রসাভিষিক্তবাক্য নির্দান তোটক ছন্দে বিনিগত হইতে লাগিল।

নিৰ্মান তোটকচ্ছন্দ।

কি বেশ, প্রাণেশ, বিশেষ, কছ। कि मार्ट, कि ভारत, এ ভাবে, तह ॥ म्लिम, य्तर्भ, यमम, प्रिथि। मजन, बिन्हम, हक्षम, जाँचि । कांश्रम, माञ्चन, रहन, ज्ञान। कि इल, चूडल, रिमल, धांग # जिज्जानि, अ मानी, कि मांबी. शरम। वन ८६, नाथ ८६, धति ८६, शरम ॥ হে কান্ত, একান্ত, যে কান্ত, সেবৈ। कि खाला, रम बाला, अ खाला, मटव # (र पूर्थ, मन्तूर्थ, अ पूर्थ, श्रांत्म । সে মুখ, বিমুখ, কোন্মুখ, জালে # मुलिन, रहन, प्रनेन, करत । (व करत, अखरत, विन दंत, करित । महीत, अधित, शक्ति, महि। क्रमत्र, श्रक्तात्र, त्कामात्र, गांके

যাতনা, সহেনা, রহে না, প্রাণ।
ত্যজ হে, ত্যজ হে, তাজ হে, সান।
বনি না, প্রকাশ, উল্লাস, তবে।
হে কান্ত, নিতান্ত, প্রাণান্ত, হবে।

গদ্য। বিধুমুখাল, মধুর বাক্য ভাবণানন্তর, ঐ সাধু মনে মনে বিতর্ক করিতে লাগিলেন। যে আমার মানসক্ষেত্র নৈস্গিক সুখের যে বীজ বিক্ষিপ্ত হইয়াছে, ভাষা অবশ্যই ইহার নিকটে বক্তব্য; নতুবা এ প্রচার্য্য প্রশ্নের প্রতি বার্ত্ত। অভাবে নিয়তই অসীম যাতনায় কালাতিপাত कतिरव। किछ हेरा छनिरलं सूथ जातिनी रहे-বেক ना। याश रुखेक প্রতারণায় প্ররোজন কি উহাকে यथार्थर विला । এই विद्युचना कृतिया প্রেय সীর দক্ষিণ করকমল, স্থীর বামকরে ধারণ পুরংসর কহিতে লাগিলেন। প্রিয়ে ! আমার অভিপ্রায় বাক করিতেছি শ্রবণ কর, ঐ সাধু ইত্যুক্তে পরার युक्त करिएक नामितन।

পরার ৷

विनन्न बहरन वरन, छन विरम्निनिन । व जारन अ जारन जानि, त्वचा रंग जीनिनी ॥ जनम कन्न रता निन जारनन जाजांग । अवभा जामान अजि, क्हेरन रेमनान ॥ माना एक मान मान हात दा क कात । जमात्र वार्शात अहे, जार मश्मात । गाताक्रभ भारम वक् करत नर्यक्रम । जार्शन जार्शन तरत, करत रत जार्शन ॥ जला बरम बम लोबो, बम खुको खुक । পালিত আমার জনে, আমি ধনমুত। আমি অভি বলবান, ধনবান আৰি। आर्थि कामी जामि मानी, जामि नर्स वामी। जागि गरा-क्रमास्त, जागिर धार्मा । ভূভারতে কেবা আছে, আমার সমান। **এ**हे क्रेश अहसारक, मा मारम निर्यात । नांना मटल नांना शटल, कतरत विद्यात । এक गरंख अक शर्य, हूई जरम कई। প্রত্যেক প্রভাক পরে, করে হই হই। কেই সৌর কেই শক্তি; কেই ডাক্ত রূপে। नाहि श्रोरी कि जान्तर्वा, त्वरा कारत जरने । (क्इ चटि (क्इ भटि, (क्इ क्रभ गटे । कांके लाडि भीला आणि, बजादेश मर्ट ॥ (कर गार्ट (कर राट), (कर बार्ट छटे। পরস্পরে ভিশ্লান্তরে, ভিশ্ল ভিশ্ল বটে ৷ (कर रात जुड़ी थांठ, बनिया कहानी। गरागड कर्ग छाई, तक ता किकांगी । उत्तरती उत्त क्या, उत्त मनाचनी। त जार जीवहा जना, रन जनकानी।

যে পদরক ধরা ধরি, ভগবান হরি। সহত্র বদলে সাধে, শেষ বেশ ধরি॥ मुक्ति आरण मुक्तकणी, भरतमुक ভাবে। जमानत्म जमानम, करम श्रति छाट्य । त्मवानि भंत्रशांगंड, स्ट्रेंटन दत्र शांत्र। ধর্ম অর্থ নোক্ষ কাম, চতুর্বর্গ পায়। একবার এই পায়, যে লয় শরণ। शतम मिक्तां। शांस, जित्वत वहम ॥ क्तं वर्ष अहे यति, भिरवत वहन। ভবে কেন শিৰ ভ্যক্তে, কালীর স্মরণ # শিব যে পরম ত্রন্ম, পুক্ষ প্রধান। मर्क्त ভाष्ट्र इंड निव, मोरमत निर्धान ॥ यमि वन विश्वाधांत, कानीत हत्।। किक भिया तम छत्रन करतम शांतरी । অভএৰ শিব হন, সৰ্ব্য মূলাধার। शर्ना कर्श (बांक कांत्र, श्रेटन शिंदर डाँत ॥ (कम जार कांनी कांनी, वनिष्ठ कीय। कारणा निर्दर्शन हरेंच, वन निर्देशिय । '(कर राम कुमिरमात, किंत्र रांका गात । अशः जिस दिमा शिक्ष. (क्वा कारत करत ॥ त्मध जीव त्महे निव, शहिवादत जांग। भक्षकरत शक्षपूरण, तीमखन गामि ह कि माद्या भिरवत भीरव, कतिरंख मिलात । (कम जार शिवमारिम, वम्म विखात »

क्रिजाटमक्र श्रीक्रशेख, क्रकि श्रेषांज्य । जर्बना छाटबम शिव, देशि द्योगोनटम প্রভাক দেখনে **জীব, পরত্যে চরণ**। **छत्रनी सूर्य जांक, जर्मा स्मान्य ह** তাই বলি রাম রাম, বল অবিয়ান। অবশ্য সভিবে ৰোক্ষ, ধৰ্ম অৰ্থ কাম # পাইবে নির্বাণ ভাব, হয়ে সম্ভদ। पूर्वादश्रम त्रोम भूमी, उस मनोक्रम ॥ क्ट् बरम प्रश्वंश्राम, जमा वनि दंह। **তবেড तक्ति मून, पूर्वा महाभन्न ।** মিছে কেন রামনান, কিবা প্রায়েলন। र्जात एरत कत गरन, न्द्रा जातायन व क्तित्म पर्रवात शाम, स्टब बीवाबाम । काना करियकारण, शाहरत निर्काण । (कर बाल वीर्वायाम, पूर्वायाम प्रदेश । তৰে কেন বেখনালা, ভাষারে চাকিতে। त्रोह करत त्वहें क्षेत्र, नता कम्मानाम । (क्यरम क्षतारत तम, मेरने टन विक्रीने e न्द्री त्रावा काका विदय, महब त्यांत्र कहव । शर्मण जारमा कर, नांबनका परवा गर्स जन जर्ध देशि, इक्रजाराज्य। निर्कात कावन रमहे, गुरिक बांक्य व वर्ष वर्ष ताक शान, व्यूक्त त्रकृ । गर्मम भारत जन्म, जनमिन् माजू ।

रक्र बरन उम्म वर्ति, श्रांशिक रूरव । **७८३ क्वम भागि गरके, माथा छर**फ शहर ॥ श्रीय मित्र जाशिवादत, माद्र समे । उँ।त कार्ट्स नित गर्भा, बेर्ट्स क्रमांहम ॥ বর্প্ত শবির সেবা, কর ছে মুজন। मामिने ध्रमान देन, जनक को रूप। (मध त अमित कारिंग, कारिंग जिस्तम । मल काकि वार्चागरन, खरम महादन जना शदा का क्योदा, मनि यूगोनम। गथकिए भीमा कार्टम्, अपू मात्रास्त ॥ এ মধ্য প্রভাগবাদ, শ্লি সহাশর। **जारत कारत बारता गाति, कक् मारि एम ।** (कह बरन रन नित्र, अर्जन कि छोत्र। याबतः बाजारा नार्भाता माज मरनात ॥ लुतालुक्तमञ्जू भारत किंद्रत शक्की। शर्क इस यन श्रीरण, गटकंत्र जनकः । जनवर क्रमहत्र (बेहन क्रम) मवादक माहित्य करत, यरमत लागिक । THE REPORT OF THE PROPERTY OF व्यवभा बहिरद क्रीन, बरम्ब लड्सा टर नाम क्रमांच मध्य माना अस्तान (: त्रमांत्र वह वर्, तम क्रिका व अ यद्यत कि क्रम क्या, त्रम: क्रम क्षेत्र । जीविक सर्वेका बाहर बहि कांक शांत

अमन सरमरत यति, अरव मा किविति। मिछात जित्र जीय, मिर्जिय मिर्जिय । कइ राम जानि जानि, धन जाति क्ति। त्रावन निकटि छोत, जोटक छोति छूति । क्त्रभा धतिल करत, दक्त कालभाना । . कांडेटक कांडेटक कांटडे, बांडेटकत बांग ॥ आदिक नद्यांत्र (यम, कडेरकत्र (कर् । जीवलाक काथा शहर, मायमा याम। मित्रिक शीखकीशत्न, जर्श वम मात्र 👫 भूरनात संकित्न तान, कवा छोत्त छता। कां छेटस चटमत माथा, वान निक घटत । कारत गंका नांत्रांत्रण, जत्माद्य त्य शहरे। वरमत बरमत बाफि, छोरांत मिकरहे ह (कर बान इस दिना, देखे जात नारे। जरमा चुहिरद करो, निर्श क्रम फार्ड ह (कर बटन स्टब क्य, स्ति स्ति स्ति। कार्शनि रहेता राह, रति नमणि । (कर वर्तन जनप्राच, जनद क्रिया (रतित उथनि यात, समन यत्र। त्रत्यरक कांक्न मृद्धि, त्र करत्र कर्णन । श्रवक्त नविमारक, नाहित्र नियन । (कर राज नर्क विषा), राउटन देवकता । बगामाण बन त्यात, निकार रेडक्सा,।

क्ट बरन मनः मछ, मालूब चनि भारे। मछीनांत्र जात्व जूरवं, शंभू जून भार ॥ চেকিপোরা যয় থানি, ভার দধ্যে পাথি। कर्जा हरत कार्या किरत, कर्जी वरत छाति ॥ (कर बरन दुशिरमात, जानि निर्क इन। (छात्रा-**छाहा विख्यांना, जाहा जाहा** दल ॥ (कह वर्त्न महानान, शूक्य ध्रशाम । কেহ কহে কেহ নহে, খোলার সমাস। কেছ ক্ষেত্ৰ পোগৰর, সার সর্ব্ব ভাবে। সভ্যে রহ কহে কেহ, সভ্যপীর পাবে। (क्ट बर्टन आंटनां-शर्थ, जांत्र मरव विटन। कार्के पूर्वात करो, वारेत्वल वरन । (कह दरल बाहिरवल, बाबू बल क्रांग । भूतांव क्लांतांव जव, नांख रागंनद्वांग । (बरमटक मा त्यटके त्थम, खम माख मात्र। किहरे किहरे मन, नर्स कविकान । कर्च कांट्य कर्चटकांत्र, करत व्यनिरात्र। कानकारिक अरम गरम, अक उम्म गांत । **बहे उम्म (महे उम्म, अहे उम्म रह**ा वन वन वन वन, नगर्यमः अ मरक बनर जन्म, नरत होकरान । अक बात्र ब्लाट्स बाहि, दश्त हात्र बाक । **এই सर्थ शंत्रणारत विवारमञ्ज मस**ी नापुजारिशत्य मारि, नात्म नापुजा

পারমান্ত্রার কেবা পার, বিদা আত্মা ঐকা।
আত্মাই ব্রহ্ম স্থরূপ, তত্ত্বদশী বাকা।
বুচাও বুচাও ভ্রম, জ্ঞান উপক্রেমে।
পারমাত্মা প্রতি আত্মা, দাঁপ ক্রেমে ক্রমে।
নিত্য নিত্যানন্দ সুখে, কাল কর মাশা।
কালের কি সাধ্য জীবে, করিবারে প্রাস ।

তথাচোক্তং ৷

ঈদৃশ কথিত আছে। ------

শ্লোক। যস্তমভ্যাসতে নিত্যং তদ্যতে নান্তর আন।।
ন তম্ম জায়তে মৃত্যুরিতি সর্বাগমোদিত।।
অর্থ। যে সেই অন্তরামাকে, নিত্য অভ্যাস করে
মৃত্যু তাহার নিকট ষাইতে পারে না, ইহা সর্বি
আগমেতে উদয় হইরাছে।

গদ্য। হে সুনির্মল বদনে। তীর্থাদি পর্যাটন পুণ্য হইতে নির্ম্বাণ আকাংক্ষা করা কথনই যুক্তি যুক্ত নহে। কারণ আত্মতত্ব ব্যতীত মুক্তির উপা-রান্তর নাই।

> তথাচোক্তং। ইহা কথিত আছে।

প্লোক। ইদং তীর্থ মিদং তীর্থ ভ্রমতে ভামসাজন।। আত্মংতীর্থং ন জানন্তি কথংসিদ্ধির্মারাননে।। অর্থ। তামসিক লোক সকল এই তীর্থ এই তীর্থ জ্ঞানে ভ্রমণ করে। হে বরাননে, ভাত্মতত্ব জ্ঞান ব্যতীত কি ৰূপে সিদ্ধ হইতে পারে।

গদ্য। অতএব হে প্রাণেশ্বরি! আমি আঝদর্শীর মতানুসারে সেই কিত্যপতেজোমরুদ্যোম পঞ্ ভূতাতীত যে সর্বাত্মা তাঁহাতে আ্মার্পণ করিয়া জগদ্বিস্মৃত হইতে বাসনা করিয়াছি। এক্ষণে তুমি আমার আশা পরিত্যাগ কর। যেহেতু স্ত্রী বিস্মরণ ব্যতীত জগদ্বিস্মরণ কোন ক্রমেই সম্ভবে না। অতএব হে হেমাঙ্গিনি! তুমি আমাকে পরিত্যাগ কর। সাধুপত্নী এই বিষাদগর্ভ বাক্যাবলি অবণমাত্র স্থিরনেত্রে চিত্রার্গিত পুত্তলিকা প্রায় মানমুখে মৌনভাবে বামকরতলে কপোল বিভাস পুর্বক ও দক্ষিণবাহু কক্ষে রক্ষে কিয়ৎকাল চিন্তাযুক্তা হইয়া মনে মনে বিবেচনা করিলেন। যে পতি যদি এইৰূপই হয়েন, তৰে অবশ্যই আমার অদৃষ্টে কট্টের অস্কুর উৎপুদিত হইবে ইহার আর স-ন্দেহ নাই। কেন না স্ত্রীগণের পতিই প্রাণ, পতিই ধ্যান, পতিই জ্ঞান, পতিই বল, পতিই বৃদ্ধি, পতিই সমৃদ্ধি, পতিই মনঃ, পতিই ব্রত, পতিই বাণিছ্য, এবং পতিই ঐশ্বর্যা, পতি ভিন্ন আমাদিগের অন্য উপায় কিছুই নাই। অতএব সেই পতিই যদি পরি ত্যাগ করেন তবে নিতাস্তই এই অভাগিনীর ভাগ্যে প্রজ্লিত অনল স্থাপিত হইল। এই ৰূপ বিলাপ ও পরিতাপ করত সম্মল লোচনে ঐ বাম লোচনা প্রিয়নাথের চরণ যুগল যুগল কর কমলে ধারণ পুর্বাক আধমৃত্ব বচনে বলিতে লাগিলেন।

প্রার ।

আমাতে জগতে সখা কর সমতুল। কাঁচের সহিত যেন কাঞ্চনের তুল। रता वर्षे न्या घरि এत विशेष्ट्रमा कुटल एम किएल एम एमरित विमर्कन ॥ বিনা মেঘে বক্তপাত হয় অকন্মাৎ। কোথায় বান্ধিব তারা নিরে সর্পাঘাৎ ॥ জরৎকাক করেছিল পতি নিদ্রা ভঙ্গ। সেই অপরাধে পতি না করিল সক। চিত্র বাবণেতে ছেরি জানকীর শ্যা।। ক্রোধেতে জ্রীরামচক্র ভ্যাজিলেন ভার্য্যা # हेख गर जरनाति कतिश मर्गन। ভার্যারে গৌত্র নাছি করিল স্পর্ল # এই রূপে দ্বিত যোষিত্রগণ ষত। পতি পদে **পদে পদে ভাজা অবিরত** । কিন্তু সুখা ভব বাকো বক্ষঃ কেটে বার। विमा त्मारव कार्या काका करत दक दकार्थात्र ॥ वृत्यक्ति (इ तम्बर्ग जम्बर्ग रहन । महिला त्रहिला छट्ड महिलादित इटल ह কান্ত হে নিভাৱে বেৰা তব পদাবিদী। कि विष्यंत्र करत जारत कत अमाधिनी । জগদিশারণ হও কিবা ক্ষতি ভার। त्मवा जना त्मविकांत्र ज्ञांथ ज्ञांकाशीत । দাসীর সহিত স্থা বোরামুরাগেতে ! माथ रह रवारशंख रवांत्री मरहेख रवारक्षर ।

याशी ए वांतिनी नर वांत्री कर वांत्र। त्यारण बारण यूरण यूरन करव मा विरमान ॥ इइेट यूजिक योग जह जिक्सियांगं। অকর্মণা হরে রবে কর্মনাশা যোগ 🛭 महाती हरत मर्क कतिव अग्न। কায়ার সহিত যথা ছারার গমন # वटन वटन कल मूल कर्ति अस्पर्या। তোষিৰ ভোষায় প্ৰিয় সপিয়া অশন ॥ কুশেতে রচিয়া দিব দিব্য সুশাসন। পাদরিব সংসারের যত কুশাসন 🛚 তব সনে কুশাসনে হট্রা আসন।। मकल क्तिव मना गरमत वाममा এ সকল वांका यनि माहि एम अछू। এক্ষণি স্ত্ৰীহত্যা হব মিখ্যা দহৈ কভু ॥ এ রূপ ন্ত্রী উক্তি সাধু অবণে অবণে। वित्निमिनी थिंछि करह विमन्न वहरम ॥ अरह वम-मिजबिमी भीरमाञ्च उरम । त्रम्भी जाजिएक भका नरह स्कान करम् ॥ তবে যে ভাজিতে বাব্য শুন সে করিণ। (ज्यारत ट्रिडिम स्त्र जन्छ गात्र^{न ॥} जगवित्रात्रण स्व कतिशांकि महत् । त्र श्रेष **एक्षन जानि क**क्रिय क्षेत्रस्म ॥ जार उन्नार का नि द्रति एवं कात । এ জন্য জন্মৎ সহ ভাজি লো ভোষার ॥ সভা বলে কি বলিলে একি অসম্ভব।
আমাতে জগৎ স্থি কি রূপে সম্ভব।
সাধু বলে সুধামুখি শুন সে আভাস।
কৌশল ক্রমেতে আমি করিব প্রকাশ।
তুমি লো জগতৎরূপা মিধ্যা নহে কভু।
ভোমাতে জগৎ স্থি করেছেন বিভু॥

त्रभगीत्क कराकत्भ वर्गमा।

ত্রিপদী।

ভূত প্রাম চতুষ্টয়,(২) হজন পালন লয়, আদি এই জগৎ ব্যাপার। অর্গ আদি ত্রিভূবন, জোমাতে লো স্মোভন, মরি কিবা মহিমা অফার॥ ক্যিত্যেরেজোমকদ্যোম, গুণ সত্ত্ব রজন্তম,

সপ্তবীপা এই ক্ষিতি, তব দেহে অবছিতি,

न्यवमनी सन जोहां वनि ॥

সপ্তদ্বীপ ক্ষিতি বৰ্ণনা।

जिल्ली।

গুৰুতর উৰু ছুটি, ছুই দ্বীপ পরিপানী, বিতৰ ছুখানি দ্বীপদ্ম।

⁽⁾⁾ अर्था वताशुक्र अवक, त्यूमक विद्या

হদি প্রধান প্রভব, সেও লো দ্বীপ সম্ভব,
এই রূপ পঞ্চ দ্বীপ হয় ॥
উচ্চ কুচ ততুপরে, মরি কিবা শোভা করে,
মনোলোভা প্রভা লো আদরী।
সেই ছুই মহাদ্বীপ, যাহার নিকটে দীপ,
অঞ্চলেতে ঢাকা লো আদরি।
এ রূপেতে হয় খ্যাতি, সপ্তদ্বীপা এই ফিভি,
অনুপম তব তনুপরে।
তুমিত লো কুলকম্যা, সসাগরা ধরা ধন্যা,
হইয়াছ প্রস্থাপতি বরে॥

मछिनिक्तः, नम नमी अनद्रावत नइ अप वर्गना।

ত্রিপদী।

অপরণে সিদ্ধু সপ্ত, তোমার দেহেতে বাপ্ত,
প্রাণেশরী শুন শুন বলি।
অকুল পাথার তারি, তরক তুকাণ ভারি,
নদ নদী পড়িছে সকলি।
ভানেতে কীরোদসিমু, নাসায় নীরদ সিমু,
বিষসিমু নেত্রে আহা মরি।
বদন তোমার ইন্দু, এ প্রমাণে স্থাসিমু,
আদরে অধরে আছ ধরি।
তদ নাই এক বিন্দু, নাভিত্পে মহাসিমু,
নাভিসিমু রূপে ইন্দুম্থি।

ভরিমে গভীর অভি, লবণসিম্বর গতি, **(र्जित मक्त रहा स्थी ॥** মৃত্যিক্স সেই সদ্ধে, মহাবলৈ রদ্বে ভঙ্গে, অনম তরক রূপে ভাগে। আতক্ষে হরয়ে জ্ঞান, কড় নাহি পরিত্রাণ, मश्रमिकु हैए। मधकारण॥ (मार्ड धर्मिला रेमवाल, वांक कृष्टे मुनाल, শ্রোণী তীর্থ শীলা রূপ ধরে। लोदना इट्सट्ड जल, मूथ विमल कमल, প্রোষ্ঠী মৎস্ত নেত্র কেলি করে ॥ ठक्करोटक ठक्क करत, खन ছल वरक धरत, বাসাক্ষাদ নত্ৰা দিতে না। তব দেহে কুলবতী, না থাকিলে কুলবতী, कूलवर्जी कथन ছड मा । কন্দর্প বাণ অনল, করিবারে সুশীওল, जनतान जिमियां जनती। এ রূপে ভোষায় প্রাণ, ভুতনাথ ভগবান, স্ভিলেন আহা মরি মরি **।**

তেতে বৰ্ণনা।

ু ত্রিপদী।

মহাতন্ত্রে শিব ইজি, তুমি ডেজোরণে উক্তি, শক্তি রূপে জগতে বিদিত। তেলো শব্দে মারী ভার্ম, কথম না হয় বার্থ,
তুমি তেলোরপেতে উদিত।

মতান্তরে এই কয়, তেলো শব্দে আগ্রি হয়,
তাহাও তোমাতে মাহি ছাপা।
তব স্তম কি পশাতে, অপুর্ম্ম বিদ্ধি দৃশাতে,
অবশাই তুমি তেলোরপা।
শিখা মিস সমুদয়, কজ্জল ছলেতে রয়,
কুটিল কটাক্ষ হতাশম।
তব মেত্র শিব মেত্র, হেরে হয় শিবমেত্র,
তেলোরপে দহে ত্রিভুবন।
তেজ করে মানে রও, তেজে তেলে কথা কও,
ইথে তেজ না বলিবে কেবা।
হাসিতে তেলো জড়িত, কয় তাড়িত তড়িত,

मक्रखन्ना ।

जिल्ही।

হংসেরে শিখাতে গতি, হংসিনী ভাবেতে সতী,
খীর হংস অংশের অংশিনী।
হলর আকাশে বায়ু, সবে বারে বলে সায়ু,
হংস রূপে তুমি লো হংসিনি ।
মাকং খননি পরে, গভারাত নাসা-ব্রুর,
রেচক পুরুষ হুই অংশ।

[22]

নিখাস প্রশাস ছলে, কুলবালা ডোরে বলে, সোহং সোহং হংস হংস ॥ ব্যোম বর্ণনা।

ত্রিপদী।

আকাশের ছলে ব্যোম, করিতেছে পরাক্রম,
বিক্রমেতে রহেছদি পাতে।
কর্ণ কুহরেতে ব্যোম, নাসারদ্ধে সে উপম,
আকাশ প্রকাশ শূন্য মাতে ॥
কেহ ইথে নাহি কম, ক্ষিত্যপ্রেজামকর্ব্যোম,
ইত্যনুসারেতে পঞ্চতুত।
স্ব কার্যো থাকি প্রাণ, হইয়াছে অধিচান,
মুনতী লো একি অন্দুত ॥
একারণ নাশি লক্ষ্যা, করিয়াছ বিশ্ব সক্ষ্যা,
ধরিয়াছ নামীর আকার।
বে দিগে ক্রিয়া চাই, জনৎ দেখিতে পাই,
মরি কিবা মহিমা অফটার ॥

नकदानि एक्न शक वर्गना।

ত্রিপদী।

সুমেক কুমেক প্রার, কুচরর শোভা পার,
চুচুক যুগল ক্রব তারা।
ছুই তারা নেত্রে ধরা, কর্ণরভ্রে ছুই তারা,
নাভি তারা শোভে মনোহরা।

নখেতে শৌভে বিংশতি, এ রূপে সপ্তবিংশ্তি, অশিনী আদি নক্ত ময়। সুমেক কুমেক মাজ, লোম শ্রেণীর বিরাজ, সম স্ত্ৰপাত বোধ হয়॥ পৃত্তবংশ এতব রেখা, আবার ভাতে যায় দেখা, কটিবন্ধ শোভে কটিদেশে। নাসায় তিলক ঘটা, অতি দীপ্ত কর ছটা, প্রকাশিছে ধূমকেতু বেশে ॥ আর তব বাম অঙ্গে, শুক্লপক শোভে রজে, দক্ষিণালে রহে কৃষ্ণপক। শুক্লপক্ষ প্রতিপদে, প্রিয়ে তব বামপদে, চত্রকলা সবে করে সক্যা। তব সনে করি প্রাতি, পাইয়া দিতীয়া তিখে, श्रम्हार डेम्स् हस्प्रकर्ता। তৃতীয়ার ক্রমে এনে, সুপ্রকাশ উক্দেশে, চতুৰী তে স্বস্থানে উজ্জ্বা। পঞ্মী তিখিতে শশি, তব নাভিকূপে বসি, ছার ছার কিবা শোভা পার। ষেন লো পড়িয়া শলি, গগণ হইতে থসি, , मिशू मीदि पूराहित कार I নাভি হতে গাতোত্থান, করিয়া যথন বান, ৰন্ধীতে ভোষার হৃদরেতে। বেন মন্থনেতে সিজু, উত্থাপিত হয়ে ইন্দু.

छम्म एवेस ग्रायटण

তিথি সপ্ত সহ গতি, অতি দীত্ৰ নিশাপতি, কুচ শেখরেতে আসি রত। মরি কিবা মনোছর, ক্রমে ষেল সুধাকর, অস্ত চলে গিয়া অন্তগত 1. अछेगीर**७ मूशकात, वक्त रा**ठ करक धरत, যথন থাক লো শোভা কিরে। নাশ সুরাসুর কুধা, মোহিনী রূপেতে সুধা, দান করি প্রেমসিক্তীরে # নব্মীতে নব রাগে, সুধাকর কণ্ঠ ভাগে, আ'সিয়া শুনিল সুধা স্থর। ভামনি লক্ষিত কায়, পশ্চাতে লুকাতে যায়, HALLE CONTRACTOR I श्रीरत जिथि এकद्विमी, मत्माइत करत भौनि, क्रभंभी (ला চित्रू के छे छ । ষেন তব অভিমান, স্থচাইতে এরে প্রাণ. मख रूर्य विदुक वृत्रश बावभीरा हक्कांमरम, हक्क छव हक्कांमरम. जामिश कनक गृना (रदत। ভাবে कि रमन मुख्या, शोहरत दमना मुख्या, ঝাপ দিব বিষসিন্ধুনীরে । त्रजनीकांस विषश्च, ভाविल এবে आंतर्भ, जर्माय पाद्य अर्गामनी। रमम क्यूम शृष्टि, करन क्ला जाजाजीक, কালকুট নেত্ৰে লো ক্লপসি।

পরে চতুর্দলী পারে, তব ললাটেতে বায়ে, यथन वित्रोटक विटमांनिनि । নাসা হলে ধরপতি, বেন অতি শীত্রগতি, সুধা আনে ইন্স আদি जिनि । भृशियांत्र भूर्यकर्मा, जर मखरक धरमा, विशेष्ठभा कार्भित्र महाराज । (यम ला धानात्म न्यूषी, मात्म खांकृशन कृषी, জননীর সভ্য আবদ্ধেতে 🛭 এ রপেতে শুক্লপক্ষ, তব অক্টে সুপ্রত্যক্ষ, अभि नका कर अक्रोत। य मिर्ल कित्रित होरे, जने किथिए शहर, মরি কিবা মহিমা অফীর ॥ কুকঃপক বর্ণনা। मयू-जिशेषी । তিখি কুঞ্পক, তৰ অভে সক্ষ, কটাক কর সম্রাতি। প্রতিপদে भनी, (एत्र क्लं मनि, পুন: ভালেতে বসতি। (इ वृशास्त्राहरन, अ वृश स्त्राहरन, म्श्रीकृ मृश्र खटन। बारेबा प्रथम, करत जारताहुन, विकीतांत्र जन्म करन । निकमक मूर्य, द्यात नेती क्रार्थ,

সক্তির অভিনয়।

কলম দিইতে, ভৃতীয়া ভিশিতে, वम्बर्फ ग्रंथीनस मरल विभि होते, होत वेश केंग, नरीन स्मरचेत्र मेरिक । रहित ननी जारन, . क्यूबी रख जारन, **जर विवृद्ध विकारण ॥** शूम: (एएइ ठॅम होन देश कीन, তথার অলকা কোটা। ज्ञात मञ्ज औरव, शक्षेत्रीरख औरव, लकारेमचीत रूपे। उथा किम शहिम, हिन दिन किला, কঠেতে বচীতে বনি। কৰু রেখা ভার, হেরে রাভ প্রার, ভয়ে জড় বড় শদী ।। कहे करू (तथा, अहे बाह्र लंबा, विश्व हकाषेद जरा वार्त बीति धर्ति, ज्या क्करमत्न, मश्रमी श्रीरंत्र में भीके हैं जारा कि विस्ता, जिन महत्तावतः, অন্তরীতে আশু গতি। त्वन भूवाक्टक केटिन करिन दरत, ननीपूरा भउनाएँ। स्तेत्र इस्टन, धामन जीतात्र,

नवनीरकारण छन्त्र ।

ক্রেনে এই ক্লেন্ডে, কর নাজিক্সেন্ড, দশনী নেতিই ক্লম্ড্রা তদতে নিয়াকে, অচিক স্বাহত,

अस्तिमी नम् रीस्त्र ।

किरोक्स किएत. संक्र फरत बिरह, श्रम: फोरव निक्तीहत ।

वान करत शहत । जिल्हा करता ।

गर जरतांत्रकी, अन्कम्रत शामी, ठजूकमी खांदश शदन ।

ন্থ বিশাক্য, হেরি নিশাক্য, অনক্ত শোক্তিকে রবি

অমাবস্থা হয়ন, তর পানছলে, চলে পুলাইক্তে হবি ঃ

এ মণেতে নক, তিবি ক্লাপক,

তব অলে চনংকার।

(व विद्याप कार्ये, जातका वाहे। क्या विकासकीत व

नवार क सामम तालि वर्गमा । विकासी

मीबर प्रतिस्था मोधः मीध वृति स्वित प्रते। वत्रम विषया स्थातन्त्रम्

रणात्र विकास जमाः स्वी देन हर प्रा देश कृति राजन केलन अ **চতু** श्रे बृद्धि समा, क्रिनाम बुध ग्रेग, রতিতে বট লো রহস্পতি। कमल जाशांद्रतार्थत, अटक्टल शांत्रण कत, मृत्ये मनि मिर्फ मा श्वि । तिथ भनि वृद्धि रति, नामा चानि मामा चति, र्एत्र्म क्छ मर्गमंत्र । ভত্ৰপ কটাক্ষ ভব, অধিক কি আর কৰ **(इतिराम टेक्डमा माम इत ॥** विमा प्रविकास भागी, आंजिबाटब ला ज्रशित কারা সহ ছারা রাছ কেতু। **এई क्रार्थ अंह मत, विक्रांकिछ म्हार उत,** রাশি চক্র আদি বড় ঋড়ু ॥ श्रम अरमा जूरमाहमा, जन्म ज्याम अ जूहमा, ষে ৰূপ ৰচনা লো ভোমাতে। त्मव कांत्रि मीनवांनि, वर्गशंत्र गरव कांत्रि, ৰড় ৰড় বৰ্ণিৰ পশ্চাতে। मृत्करक नाक्टित र्रोण, अकात वित्रारक रमव, विश्रुषी छानांचेटव कांत्र। র্দ্ধি মূপ হীরাধার, অভিয়ে কর সংহার, र्टेएएर म्थान जात । यति त्छारक बर्फ्, धनी, मच्छात्र मा दव बनि, আভাবে বুৱাও গড়ডরিক। त्मरवन ज्ञान जीन, यहा नैका मारि कान, কর গতি গতাসুগতিক।

क्षत्य छद योज्ञा, क्षत्रणा मञ्जद हेर,

হেতৃ ভদ্পরে কুচ হর।

अरह कांद्वा कांख गर, अक्ज वर्थम तर,

মিথুন শোভয়ে মনোহর #

वाहित्त्र नाहि श्रकाम, शृह विवत्त्रक वाम,

কভু মৃত ছও গর্ৱ ধরি।

কর্কটের যেই ভাব, ভোষাতে নাহি অভাব,

অবশ্যই তুমি অশ্বভরি॥

जिश्ह ल्यांटिक करि उटि, कना क्रेश पूरि वटि,

তুলাও ভোষার অঙ্গ শোভে।

বেহেতু সদৃশ তব, তুমি ছও অনুভব,

অসুরূপে সর্ব্য রূপ লোভে।

नांकि इटफ कूठकनि, अविध व लांगावनि,

ছন্ম বেশি রশ্চিকের তনু।

क्रिक्ट इमारक मम, करत्र इ व्यक्त शांत्रन,

প্রিয়সী ভফ্টন রাশি বসু।

ধল সহ হয়ে যোগ, মকর করিছে ভোগু,

তাহার প্রমাণ তব সদে।

করি অর করি কুন্ত, কুচ কুন্ত ছলে কুন্ত,

বিরাজিত ছবি পদ্মাসৰে #

নাশার পালেতে রালি, শ্লোকীনৎস্য ছই অ'াখি,

मीनहां भी छाट्य मूथहांत्र।

প্রিরসী লো ও প্রসঙ্গে; ধরিরাছ স্বীর সঙ্গে,

ছল্ল বেশে রাশি চক্র ভার 🛭

ওলো ভোরে ভাই বলি, ত্রন্ধাণ্ড রূপিণী হলি, ত্রন্মন্মী ত্রন্মের আধার। বেদিগে ফিরিয়া চাই, জরৎ দেখিতে পাই, মরি কিবা দহিমা অফীর ॥

> বড় ঋতু বর্ণনা। প্রথম গ্রীম ঋতু বর্ণনা।

> > जिभनी।

তব ললে জাহা মরি, প্রীম অতু দৃশ্য করি,
সুন্দরী লো শুন সে আভাস।
প্র্রাকার্মণি গলে, কেবা প্র্যাকান্ত বলে,
প্রাং প্র্যাহতেছে প্রকাশ।
মালেতে থাকিয়া ধনী, দীর্ঘ নিশাসের ধনি,

যখন কর লো ক্রোষ মনে। মনে হয় গেল আয়ু, আইল রে অগ্নিবায়ু,

त्रभीकत रहेर कमत्म ॥

(म) मजर्ड नमा इ.अ. नाशित मा कथा कथ, मूथलम् मनिन वहर्ग।

হার বেদ রবি করে, সরোজিনী সরোবরে, বারি বিদে সাধিছে দরণ ব

(मिश्रतम क्यमिनी) हरत्रह्म गर्यामिनी, जाँपि इन जाँपि इन इन।

क्रम्म क्रम्म इतन, जाशन महस जतन, भीजन क्रास भजनन ह क्षात्र मार्च मार्थ, त्नांगक्थ तारे मार्थ, তাজি যথ ধরি অপ রপ। भाजन निःश्व रहा, अवतन मुकांत्र कहत, ভাষদী লো একি অপরপ # वाति वित्य कतिवत्र, जुवात हरत कांजत, শুহকঠে ভাপিত সত্তরে। खम ছলে রাখি মুও, লোমবিলি ছলে শুও, वोक्रांदिहरू ध्यम मदर्शवदत्र ॥ ৰলয়া পৰ্বত প্ৰায়, বক্ষত শোভা পায়, कर्शत हरत यह करि। लिल्नाम खन्न खन्न, करलदन धन धन, कैरिश रवन शांताहरस मणि मक्न जरून बरन, सिनिनी निष्य हरन, कां विशे स्टब्स् इर्शन। ভবাচ ना जान हेटि, कांशिश कांशिश डिटर्र, गमरमा दर्शित तम ध्रमान । ट्ट्य धन्ना कम्लामान, मृद्य अर्थान्न धार्ने, श्रमाटक डेमाक वेत्रा छाटन । কতবা লইব নাম, চতুবিধ ছুত আম, सत्र सत्र मियांकत्र एउटल । र्शि हो खरकत मन, कतिहरू ऋषिक जन, कृषाकृत मत्व शहाकाता। वहिया विरुद्ध थान, नकरम राजाम थान, विवा रुकि एत छात्र भात ।

শ্রীপ্ন ঋতু তব কায়, এরপেতে শোভা পায়, হায় হায় অতি চমৎকার। ঘেদিগে কিরিয়া চাই, জগৎ দেখিতে পাই, মরি কিবা মহিমা অফার ।

বর্ষা ঋতু বর্ণন।

जिन्दी।

मिथि ना आकर्श वहे, कामिनी ला छाति कहे, বৰ্ষা ঋতু স্বলৈদ্য সহিত। मत कारत मत तर्म, वित्रां जिल जब अरम, আদরিণী ভাতি মুপ্রমিত ম भ्रतिया मोमिनी दिना. अमारे ठांठत दिना, वधम श्रोकत्मा स्थामत्न । उथन कुछल जान, शांजिज नीतम मान, क्षां किए दिस्त दहन नव गरन । जारह किया नीचा हात्र, क्रक्षवर्ग भटे आह. हिक्त इटलट्ड घनगंग। (मार्थ क्रथ एक थोनि, मान अहे अकुमोनि, **८२८ एडिं डांकिल ठळांनम ।** मार्व कर इस इस. (माज ब्रांस वर्ट क्ल, थातीय धतात नाहि चन। (धन नव मदयम, इकि कति यम धन, रकि विकि मानिए मकन ।

वधन खजन काथि, अक्टिन ननदक वाथि, वांत्रि विष्यू शंक क्लाट्स्ट । मात्रांश्रंहे विष्यू विछा, इत्मर्ख छिष्ट मीछा, মনোহর শোভা বেশরেতে। পয়োধরে পরো ধার, পড়িতেছে অনিবার, অনুভব সম্ভবে তাছায়। ग्यरमत रहम शारत, जनशत जन शारत, পর্বতে বরিবে মরি ছার। বারি আশে চাডবিনী, বেন কড পাডবিনী, खनेत्रस इत्म क्रांत्म । लिलानात छेईमूर्य, छ्वा इवा करत मूर्य, **इक्ष्रुएक मक्षिक करत्र जला।** लक्ष्योदेश कुछ देनन, बाह्रि छाति देश देवन, তরকে প্রবেশে নাভিকূপে। বেন ধারা ভ্রোড ভরে, পড়িছে নাডি গহারে, পর্কতের নির্বাস্থ রূপে॥ যখন লো রার ভরে, মুক্তাছার ছিল করে, वक्रत पूर्वटक कर्त्र शीख । उथम मानिए एकि, रह राम नीता-हरि, कड़न जार्चारक बढ़ाबांक है यम अम्मरमञ्ज दिन, अमूनानि छान दनी, चनत्र गडीत गतर्म कर्गाफ जकरत राम, जगफ पूरित जरत,

जायती का जवत गत्र**क**

বন্ধা অভু এ নীতে, স্থীয় কাৰত সহি ত, সূপ্ৰকাশ শনীৰে ভোনার। বে দিখে কিনিয়া হাই, স্থাত কেখিতে পাই, মনি কিনা মহিনা ক্রকার ॥

শ্রদ্র্ণনা।

किंगते।

कममान्त्रि कांत्र स्व दर, मृगा इत्र कर स्वटर, শরৎ বতুর আরিভার। সাধিতে আপুন কার্য্য, বিজয় বীর্ব্যেতে রাজ্য, শাসিতে হে শুনু সেই ভার # यथम विधवनतम, ज्याजिया मान वामतम, নেত্ৰ রগড়াও বিরা হস্ত। शक्षिक अर्थेशिका अस्तर अस्तर के विकास रहेरजरक क्रियाक गराक ब হের হের মনঃ হরে, তব মুখ শশররে, বিলিড হরেছে রেখ মরি। भंतम मीत्रम हैं। में दिस्त दा मिक्सि कैंगि, धतियारत अवस्यत अभी।। (र महिट्ड किया क्रम, क्रमि महात्रांत्त क्रम, কত পত পত মতন্তা। থীবা হলেতে সুধান, ভাতে শেভা পার ভাত, वानम् वनम् क्षेत्रः ।

महत्र मीत महिन्दी विभिन्न मीन मनिनी ভারারণ ভাইৎ কৃত্য রূপ। कारत ग्राफोरशंत, वार महिन कृतिर्धन, কুচকলি কলিয় সন্মৰ্ণ 🕏 कृष्टा अ कृष्ट देशहत, जूरवारम जूरणांचा करत, হরিণামি হের লো লোচনে। ষেন নৰ সৰ জালিঃ দলিছে কৰ্ল কলি, मध्भारम माखिटक स्मिन्टम ॥ আর তাহে শোডাকর, লোম তেণি মনোহর, মৃণাল ছলেতে অকাশিত। আহা মরি কিবা শোডা, নাভিপন্ন মনলোভা, সরোজিনী রূপে বিকসিত। त्मां किए रहांक छक, वृश्तंत इतार छक, शांत्रका शक्तिमी विद्याला। वह बंद्छ क्रम क्रम, क्रम बन ज्लामन, প্ৰক্ষুটিভ ভৌৰাৰ কানাৰে नांवना इरनरंड जन, कविरक्टंड डेनेडन, काम किन काम गर्म । त्वन (अपि व्यप्ति नीम, जरन करिन जरन जीन, क्षेत्रोत हक्षण वर्षण । हान्य जान्य मृना हत्म, विश्व वरका देनी वरण, সেকালিকা পূজা বিক্লিড।

णा-वर्षि कि लक्षांपणा, प्रतिहरू क्षणवाणिका, मीनापरवह करत अमानिक ।

কৰ্ণন্ত শোভে নেবা, প্ৰক্ৰিড বেল জবা, গীনতে লিজ্ব ভার কলি। বাহ বনে শোভে শথা, হেনি বেল পুষ্প কড, অৰ্থাৎ নে বক্তুল বলি।

সোহানিবী ভব কার, এ রপেতে লোভা পার, শরভের অতুর বাহারণ বে দিরে কিরিয়া চাই, অগত দেখিতে পাই, দরি কিবা দহিদা অভীয় গ

निनित्र वर्गमा।

बिभगे।

आहर जब त्मार थांग, द्वित् जिह विमामान, बंकृतांच निर्मित्र मोत्रकः । थांचा दीन थांचांकर, कन्मांगंदन भांचांकर, इदेशांदर गींचांची नात्रकः । महिना दात वत्रणं, जब देशन वत्रणं, वाना चार्च चांदांचां तक्षिणः । वन अत्ना तम्बची, वर्षः किना विन्नंगंजि, कामांगंदन देशांचे द्वाचित्र । गत्यांच द्वावांच्यं, वर्षने चांच्यंच वात्र, नात्रत्यांच कृति चांचियांच व्यव्यांच्यं, विव्यां त्रव कृतियांच्यं, चांत्रियंच वाद्यं वाद्यं, विव्यां त्रव कृतियांच्यं विव्यांच । मिलन अ मूथहेम्मू, छह्भात विम्नू विम्नू, ঘর্ম শোভা পায় লোমকূপে। মরি কিবা শোভা করে, সরোজিনী সরোবরে, কেশরে তুষার লিগু রূপে॥ मा इडेरत छेन्गीनिज, यमस्य निमीनिन, নেত্র দ্বয় স্থির পক্ষ হয়। যেন হে নীছার সনে, জড়িত ভ্রমরাগণে, মৃত্যু প্রায় কমলেতে রয় । কি শোভা কুচকলিতে, যুক্ত যুক্তা কাঁচলিতে, নয়নেতে ছেরি শুভ্রময়। মরি বাছারে বাছারে, ষেন প্রণাঢ় নীছারে, ঢাকিয়াছে গিরি হিমালয়॥ মুক্তাবলি-কঠে ছিড, তাহে যেন বিক্সিড, শোভাগ্তৰ প্ৰপ্ৰ মৰ মত। আর ষে লো কুলবভি, যবে ছও ঋতুবডী, কোকনদ কোটে কত শত ॥ শিশির পতি ছুর্দান্ত, এরূপে শোতে নিতান্ত, कव काट्स मिया गर्गाता । ষে দিগে কিরিয়া চাই, জগৎ দেখিতে পাই,

মরি কিবা মহিনা অন্টার ॥

[%]

শীত বা হেমন্ত ঋতু বৰ্ণনা।

তিপদী।

প্রিয়ে ৩৭ কটিতটে, আহা মরি কিবা ঘটে, মেখলার সন্ধি চক্র বিভা। रयन कना। भरमां जीर्न, इत्य इन अवजीर्न, উদয়াচলেতে রবি নীভা ॥ স্থানাস্তরে মুক্তকেশে, থাক মুক্তকেশী বেশে, সন্ধিচক্ৰ লুপ্ত কেশ জালে। ষেন নববধ প্রায়, ঘোষ্টা টানিয়। ছার, त्रविष्ठ्वि जांदक स्मध्य मारल ॥ নিশিযোগে নিশাপতি, হয়ে উঠ দ্রুত গতি, স্বপতির হৃদর গগণে। লাজ মুণ্ডে দিয়া বাজ, সাধ বিপরীত কাজ, হয় কিবা শোভা সেই কণে॥ অনিবার পরিশ্রমে, চর্মা ভেদি ঘর্মা ক্রমে, তার্দ্রিভূত করয়ে শরীর। फोटर रहन रह मुक्कि, इटल करत ऋशोहिकि, শত ধারে পড়িছে শিশির 🛭 क्रिया वटन क्रव कांग्र. बीलवांग मांका शांग्र 8 (घ कड़ मीनवाम नह। জামি বলি ধূমাকার, অভি গাঢ় অন্ধকার, क्लावाहिका (गोटिक नमूनग्र)।

তুমি লো উর্বরাধরা লকণে পড়েছ ধরা,
চিনিবারে সাধ্য আছে কার।
রিভ অন্তে রসবভী, দেহ কিভি শস্যবভী,
ভাবে বোনা কি বলিব আর ॥
এরপে হেমন্ত কাল, তব অলে শোভে ভাল,
অবিক কি করিব প্রচার।
যে দিগে ফিরিয়া চাই, জগৎ দেখিতে পাই,
মরি কিবা মহিমা অফীর ॥

বসস্ত বর্ণনা ।

ত্রিপদী।

एहत अला मृगरमर्ज, जित काराव क्लर्ज, वमस श्री जून व्यक्षिण ।

मित मित किया क्लिंग , क्लिंग मरमारमिण एहित्य एक हम, ऐसिक्जामि ममूमम, जीर्ग भर्ग ज्रीम मराम निवास मित्र मित्य मित्र मित

করিয়া এরে স্বদর্প, তোমার দেহে কন্দর্প, সৈনোর সহিত বিরাজিত। वादाक कति कछे। क. (मथ अला शक्षमां क, অগঞ্জন জগত রঞ্জিত ॥ ভুক ছলে ধরি ধনু, মাজায় মিশায়ে তনু, লোচন ছলেতে ফুলবাণ। कड्याम शतम (मर्थ, जांकर्ग मक्षारम (थरक, ব্যাতিছে প্রেমিকের প্রাণ এবদিধ বিধায়েতে, রাখিয়াছ স্বকায়েতে, यमस्मदक जुलारा दत श्रांग। অতেব তুমি মোহিনি, মদন মন: মোহিনী, রতি ছলে রতি কর দান॥ वजरखुत जानमान. श्रिया छव एम - वरम, যুক্তলিত নানা ভৰুবর। হেরে চিত্ত আদন্দিত, অতি রম্য অমিন্দিত, সুগদ্ধ বহিছে কি সুন্দর । জাতি মল্লিকা মালতী, যুথি বান্ধুলী সেউতি, নাগেশর কাঞ্চন মাধবী। हारमित हक्कमित्रिका, क्यूँदे स्वयु जिकां निकां, क्रक्षाकली कमन कत्रवी । कार्यिनी तजनीशक, । शक्तरांच (पर शक्त, গোলাপ জালাপ বোগ্য প্রভা। क्लाक क्रिक्लाक, शाँमा **स्रवर्गक्लाक**, অশোক কিংশুক বক জবা #

कमल पल ८क मिल, कूमूप इन्हरूकचल, মথমল কুন্তল দোপাটি। মদন লোধু ধাতকী, কুন্তম কুন্দ কেতকী, পারিজাত ফোটে পরিপাটি। সোণাযুথি শোভাঞ্জন, বকুল কুলরঞ্জন, ফুটেছে পাকল স্থামণি। तक्रम (इर्थू तमाल, कतिल भिशाल छोल, व्यारमारम कृष्टिष्ट क्यूमिनी। (b'ड़ि हरल (bड़िलड), अरख्शम इश्मलडा, মুম্কা ছলে মুম্কালতা ভায়। করঞ্জ অপরাজিতা, বন ফুল বিকসিতা, ধুন্তরা বিস্তর শোভা পায়। হেলার ফুটিছে হেলা, দাড়িম কদম বেলা, আকদ কনোট তুন্দ জায়। थर्ज्जृत आञ्भाजन, मधूत कलेकि कन, শোভিছে আমড়া নিচু আ্ড্র॥ অশ্বাদি দেবদাক, মুকুল পুঞ্চেতে চাক, শোতে সবে লোভে অনিকূল। অপার মুখ সাগরে, ভাসে নাগরী নাগরে, কুলবালা থাছি চায় কুল॥ এরপে উদ্ভিক্ষ রঙ্গে, সংযোজ্য ভোষার অঙ্গে, ভতুপরে নানা পক্ষণ। নানা ভারে করে গান, রসিকের হরে প্রাণ,

প্রিয়া বিনা নাহি প্রয়োজন ॥

क्रिक धर्मान छात्र, अधिन छतिता भार, স্থর যেন খরতর শর I वित्रहीशर्भत काल, कि काल वमस्काल, क्मरमण्ड इहे व्यवमत् ॥ ভুক্ত মাতক তুরক, বেঙ্গ পতক কুরক, কুলের অাতক ভক্ষ করে। মাতিয়া অনক সঙ্গে, সুরত্ব প্রসঙ্গে রজে, অক্সের ভঙ্গিতে মনঃ হরে 🛭 कहिर कि अधिकांत्र, रमरखत अधिकांत्र, কামাসক্ত হইয়াছে সবে। কত বা লইব নাম, চতুর্বিধ ভূতপ্রাম, মাতিয়াছে মদন উৎসবে॥ এ রূপে ঋতু বসন্ত, ভোমার দেহে নিভান্ত, वित्राजिक रेमना महकात ! ষেদিগে ফিরিয়া চাই, জগৎ দেখিতে পাই, মরি কিবা মহিমা অফীর।

গদ্য। হে নিজ্ঞলক সুচারু চন্দ্রবদনে । লতা-তরু ফল ফুল ও পশু পক্ষ প্রভৃতিতে শোভন তম যে ষড়গ্লাতু, তাহা তোমার অঙ্গে প্রকীণ রূপে প্রতীয়মান হইতেছে। কিন্তু বসস্তু বর্ণনায় ফল ফুল মুকুল বিশিষ্ট রুক্ষ, লতা, গুলা, পশু পক্ষ ও কীটা-দিওেয়াহা বিরচিতকরিলাম তাহা প্রমাণপ্রসিদ্ধ হয় নাই অর্থাৎ প্রত্যোকে প্রমাণ প্রত্যক্ষ কথনে কাপট্য হইয়াছি, তাহার কারণ যে স্থলে চতুর্বিধ
ভূতগ্রাম প্রকাশ পাইতেছে, সে স্থলে সমস্ত প্রমাণই সুপ্রসিদ্ধ বটে। এক্ষণে ভূত গ্রাম চতুষ্ট্র বর্ণনা
করিয়া তোমার ভ্রম দূর করিতেছি।

প্রথম, মনুজ বা জরাযুজ বর্ণনা।

जिल्ली।

ভুত প্রাম চতুষ্টর, প্রিয়ে তব দেছে রয়, ষথা শক্তি করি লো বিদিত। স্ক্লিতে মনুজ সর্ব্বে, অঙ্গেতে ধরেছ গর্ব্বে, বীঙ্গ ক্ষেত্ৰ অতি অপ্ৰমিত। পশুপতি সিংহরাজ, কটিতে করে বিরাজ, পশুগণ সবে নত্র তুও। অঙ্গ চালি তব অঙ্গে, মান্তন্থগণ আতকে, বাত ছলে জাগাইছে শুও। कि व्यांकर्या स्वयं मजी, गमरम कूळ्य गिंड, किं मिश्ह (मर्थ केंद्रि क्रिक्त । হেরে স্বীয় স্বামী ক্রোধ, করি করে উপরোধ, **(मामारेश कत कत जुर्श ॥** व्याप्त छब्मनीगरन, विशाम वाजिमीतरन, ইংখ তুমি বাঘিনী বিদিত।

মৃগগণ সশক্ষিত, তব দেহেতে অক্ষিত, নেত্রে দেত্র করি সমর্পিত। ত্রাণ যদি নাহি পেতে, হরিষে পুরিষ খেতে, বটে কি मा বরাছ রূপিণী। योवन मर्गिष्ठ वर्छ, এ ब्रक्त†छ नछङ्ख, করিবারে পার লো আপনি ! ছাগী প্রায় কামরতা, নাহি বাছ স্থতা ভ্রাতা,(১) যারে পাও তারে মান ধন্য। किंती मा रल किरत, अधकां जि श्रकरंगत, দৃশ্য করে বিশ্বরে অগণ্য 🛭 হ্নর পিঞ্জরে বাস, প্রাণপাথি পায় ত্রাস, ইথে তুমি মার্জার শোভিত। এ রূপে মনুজগণ, আনন্দে হয়ে মগন, তোমার অঙ্গেতে বিরাজিত। প্রত্যেকে লইতে নাম, রসনার অবিশ্রাম, (महे जना इत माउक्माता বে দিগে ফিরিয়া চাই, জগত দেখিতে পাই, মরি কিবা মহিমা স্রফীর #

(১) ह्यांकः।

সুবেশ পুরুষ দৃষ্ট্যা ভ্রাভরঃ যদি বা সূতঃ। যোকিক্রিদস্কি নারীণাং সভ্যংসভ্যংহি নারদ।।

দ্বিতীয়, অগুজ বর্ণনা। ত্রিপদী।

অগুল হে তব অলে, বিরাজিত নবরজে, রন্দিণি লো শুন সে আভাস।

ভ্যাভিয়া আকাশে বাসা, নাসায় মিশায়ে নাসা,

খগপতি সুখে করে বাস ॥

হেরিত গরুড় বিহঙ্গ, আতিকে যত ভুজন্গ, বেণী বেশে ঢাকে স্বীয় অন্ধ।

হয়ে অতি আকুঞ্চন, করবী ছলেতে রণ, সিংহ ভয়ে যেমন কুরক ।

অঞ্চনে রঞ্জন আঁথি, যুগল ধঞ্জন পাথি, ধ্যিয়া রেধেছ দাসা পাশে।

কোকিল কাকলি সম, তব ভাষ অনুপম,

প্রিয় যবে ভাষ সুধাতাবে ।

গৃধিনী তোমার তাবে, ভুলিরা প্রক্র ভাবে,

कर्न माका द्राधि करद बाम।

তজ্ঞপ কপোতগণ, দেহেতে মিলিত হন, বদন চুম্বনে সে প্রকাশ ।

চক্রবাক চক্রবাকী, ধরিয়া করিয়া কাকি,

বস্ত্র ঢাকি বল পরোধর।

মুখ সুধাপান জন্য, চল্লোরগণ অগণ্য, বদনে রয়েছে নিরস্তর ॥

শিখিগণ চুপে চুপে, আছে তব বাছরপে, পুদর গুদর কেশে মিশে রয়। দিন্ত ছলে বক পুঞ্জে, ভোমার **অক্তে** ভুঞ্জে, বউকথা কছ তোরে কর। ज्ञि (न। गिर्डिनी इंटन, मक्त भम हटन, প্রিয়সী ভোমার গতি হয়। সবে বলে থোকা ছক্, গৃহক্ষের থোকা ছক্, গৃহত্তের থোকা হক্ কয় ॥ যাঁহারে নয়ন বাণ, কটাক্ষ কররে প্রাণ, সেই ভোরে বলে চোক গেল। তব দেহে চোক গেল, আছে পাখি চোক গেল, वरल (ठांक (जल (ठांक (जल ॥ मृजी कार्त्या इतन व्रिज, जगज इहेरव श्रीजि, কেনা লো কেনা ময়না কবে। তুমি লো স্ফটিক জল, থাইতে স্ফটিক জল, সদা ডাক স্ফটিক জল রবে 🛭 লুকাইবে বল কাকে, খোপা ছলে রাণ কাকে, পক্ষ করে গগুদেশে শোভা। টিয়া প্রায় বৃদ্ধি বল, কাট লো কুল শৃথাল, गमरन महान मरमारमाणा ॥ योष्ट्रांको एटन बोला, नद मीन भना भना, এই বোল জগতেতে কয়। তুমি লো শুকের শারী, কে বলে তোমায় নারী বাজ রূপে বিশ্ব কর জয়। এ রূপে অণ্ডন যড, তব অলে সুশোভিত,

হায় হার কিবা চনৎকার।

ঘে দিগে কিরিয়া চাই, জগত দেখিতে পাই,
মরি কিবা মহিমা অফার ॥
ওূতীয়, স্থেদক বর্ণনা।
তিপদী।

বিলোদিনি তব কায়, স্বেদজ যে শোভা পায়, সুন্দরী লো হায় কি সুন্দর।

কেশ কীট অপ্রমিত, মন্তকেতে সুশোভিত, স্বেদজ রূপেতে মনোহর ॥

জার যে লো বিধ্যুথি, তব আঙ্গে হয়ে সুখি, মক্ষিকাগণেতে রঙ্গে ভঙ্গে।

ভূলেতে করিছে স্থিতি, আচিল তিল প্রভৃতি কুষ্ণক্রণ আদি যাহা অ**লে।**

ক্ষত্রণ আন বাবা প্রাণ দ এ পদ কম্ল ফুলে, কলরবে অলিকুলে,

কিঙ্কিণী হইয়া থাকে পায়।

मख इरा मधुमरम, नातन लहेश शरम,

পদে পদে তব গুণ গায়॥

मनक চরিত্র লয়ে, মিফ স্বর কর্ণে করে,

ক্রনেতে মেছিত কর মদ।

ভাবশেষে প্রাণধন, হর তার প্রাণধন, মুশারূপে করিছ ভ্রমণ ঃ

এববিধ বিধারেতে, স্বেদ্রজের স্বকারেতে,

ধরিয়া ছ মরি চমৎকার।

व मिट्ट कित्रिया ठाँहे, क्रांच मिट्ट शाहे, मित्र किया महिमा व्यक्टीत ।

চতুর্থ, উদ্ভিজ্জ বর্ণনা।

ত্রিপদী।

প্রত্যক্ষ হবে কহিলে, দেখ দেখ ও মহিলে, উদ্ভিক্ত উদ্ভব তব কায়।

কি সুচাৰ গুৰু উৰু, তৰুণ কদলী ভক,

নর গৰু ভিক্তাবে চায়।

আন্তা নোমা তাল বেল, কুমাণ্ড ও নারিকেল,

তুম্বিফল প্রভৃতি কদম্ব।

বার্ত্তাকু জামির জার, কমলকলি মাদার,

চাল্দে আত্র পদস দাড়িয়॥

তাই প্রিয়ে তোরে বলি, এ সব পাদপাবলি, ছদিমাঝে হয়েছে উদয়।

क्तानमाट्या इरस्टक् उनस्म

জাহা মরি কমলাক, প্রভ্যক্ষ করিতে সাক্ষ্য, বক্ষে রক্ষা কর কুচম্বয় ॥

ন্মর্শকাপা ভক্ষর, ছেরি তব কলেবর, পাদপাণি শাখা সাক্ষ্য জন্য।

क्रमू नि इत्त कलित्क, भारि ला क्नरोनित्क,

বরণে হরিক্রা ক্রম গণ্য 🛚

वत्त शतक शेषा, मृशीत्मत दिशे हता,

করন্বয়ে কর প্রকাশিত।

তিৰ ডক মনোলোভা, একার সূচাক শোভা, নাসাছলে ফুল বিকসিত ৷

यहिना को ऋनिर्मन, जनन मीनकाल, लहेरल को कोएरमत हरन। लारमत्र आविन नारम, नव मव मूर्वानारम, मिश्रीष्ट्र करलवत प्रति । मड़ां करत वर्गमड़ां, भीता हरन विदूमड़ां, স্বীয় অঙ্গে করেছ ধারণ। পक विश्व ७७ ছल, उव वनन-कगरन, हिन्दु (मद्र जिनिशं वत्रं। कूम कुरूम शांपरश, शत्तक वनम छर्भ, দম্ভ ছলে ফুল প্রফুলিত। त्रकु दक हक व्यक्ति, उन्तरन निर्दाटक वीत्र, কৰ্ণ রূপে পুদ্প প্রকাশিত। সার্দ্ধ ত্রিকট্য মাড়িকা, যন্ত্র প্রফোর লতিকা, অন্তরে রেখেছ চুপে চুপে। বিদলাদি শতদল, প্রফুল সহত্র দল, অবাচ্য অপরাজিতা রূপে॥ এ রূপে উদ্ভিক্ত মালা, অতে লইরাছ্বালা, वर्गियात मांश कि आंगात। य मिर्ग कितिया हाई, जगड मिथिए शिर्द, मति किया महिमा खरोति ।

গদ্য। অত্তর হে বিনিদ্র সরোক্সহাকি! ইত্যাদিত্যাদি বিধারে তোমুতি আর অগতেতে কিছু মাত্র বিভিন্ন নাই। তুমি যে অগৎ স্বৰূপা তাহার আর সংস্থেই বা কি? এ কারণ অগত পরিত্যাগ পরিচেষ্টার তুমিও পরিত্যাগের পাত্রিণী হট্টরাছ। অর্থাৎ জগত ত্যক্ত ব্যক্তির তুমিও ত্যক্ত।

তথাচোক্তং।

ল্লোক। যশু স্ত্রী তশু ভোগেচ্ছা নিঃস্ত্রী-কশু কভোগভুঃ। স্ত্রীরংত্যক্তা জগন্ত্যক্তং জগৎত্বক্তা সুখীভবৈৎ।।

জক্তার্থ।

ঈদৃশ উক্তি আছে। যাহার স্ত্রী আছে তা-হার ভোগের ইচ্ছা হয়। স্ত্রী রহিত ব্যক্তির ভোগ-স্থান কোথায়। অতএব স্ত্রী ত্যাগ করিলে অগত ত্যাগ হয়। এবং অগত ত্যাগ করিলে স্থাই হয়।

গদ্য। শ্বতএব হে প্রফুল কমলদল বদনে?

কাত সহিত তুমি আমার ত্যাগ যোগ্যই হইরাছ।

তুমি জনগণের ক্দর প্রের ভ্রমরী রূপা ক্দি

সরোক্রহ দলে কেলিকলাপ বিলাসিনী হইরাও

জনগণের যে ঘূণিতা ইহা প্রত্যক্ষ প্রতীরমান হই।
তেছে। কারণ তোমার বক্ষে সুমেক চুড়া সক্ষাশ

কুচলিরি দেখিয়া মুচ়গণে চুচ্যানে প্রগাচ আড়া

রে মদনোৎসব করেন। কিন্তু সাধু মগুলীতে

[63]

তাহার বিপরীত জ্ঞানে ভোমার প্রিতির প্রতি প্রতি কুলব্রপে ঘনোন্নত স্তনত্বরকে পেশীবর্তুন ব্যতিত জার কিছুই বোধ করেন না ।

জতএব হে মদন মনঃপীজিতে তজিৎ জড়িৎ বরণে। তুমি সাধুগণের ন্যায্যই তাজা হইয়াছ।

তথাচোক্তং।

লোক। পুরুষামিষ রসরসিকা লোচন দশনা মনোবনগা। ধরতর গতিক্কতিনধর। দ্বিপদ ব্যাদ্রী গৃহে গৃহে ভ্রমতি।।

অস্থার্থ।

ইহা উক্ত আছে। পুৰুষ স্থৰপ মাংস রসেতে
ভূপ্তা এবং চক্ষু ৰূপ দৰ্শন যুক্তা ও মনঃস্থৰপ বনেতে ভ্ৰমণকারিনী এবং খরতর নথবিশিষ্টা যে
স্ত্রীৰূপা দ্বিপাদ ব্যাস্ত্রী সে পুরুষ গ্রহণার্থে গৃহে গৃহে
ভ্ৰমণ করে।

তথাচোক্তং।

ह्योकः। मर्व्यवाः पायत्रचानाः सम्मून्ति कतालमा । इःथम्ध्यनम् निष्णं मनमञ्ज समञ्जर्भा ॥

পণ্ডিত কর্তৃ হ কথিত।

অর্থ। সকল দোষ ৰূপ রত্বের ভাণ্ডার এবং ত্রংথের শৃদ্ধল স্থৰূপ যে স্ত্রী সকল ইংগ্রা আমার পক্ষে ব্যর্থ হয়।

গদ্য। ইত্যাদি উক্তি করিয়া সাধু পুর্ববিৎ
তৃষ্টিস্থিত হইলেন তদন্তর ঐ শুদ্ধাআর সোহাগিনী
পুনর্কার পতিকে পুর্ববিপ দর্শন করিয়া নানা মত
সন্তোগের বিয়োগ জানিয়া হা হা স্থর নিসরণ পুরঃ
সর যুবক যম সম যুগল লোচন জলসহ ছল ছল
বিলোকন করত দীর্ঘশ্বাস পরিহরি বিরস বদনে
জীবন নাশের প্রার্থনায় যজপে আক্ষেপোক্তি ক
রিতে লাগিলেন তাহা যমক পয়ার প্রবন্ধে নীয়ে
নিবদ্ধ হইল।

যমক পয়ার।

कि उभात कई यात एम्ड इट्छ धान ।
किटम ज्व इट्ट वर्ड एम्ड इट्ड धान ह
जीवरम जाममा किम जीवरम वाममा ।
जाममा विटम काम जाम कि वाममा ॥
व त्रमनी जमाधिनी क्द यद मद ।
भव विटम क्मरम किन्न इहेरम मिःवाम ।
वरम वा जमरम कन्न महिरम निवाम ॥

মৃগয়া করিতে কাম এলে একানলে। কি কাকুতি পঞ্চবাৰে কবে এ কাদৰে॥ পথ্যানন প্রাভব হন পঞ্চাননে। সর্বাত্র প্রকাশ ভাহা হয় পঞ্চানদে। ভাতএব সে সময় কেমনেভে রবে। ষ্থন হানিবে বাণ হান হান রবে। श्वशः राम अहे त्मह कत्र ज्यातीनि । স্বয়ং বলে এই দে**হ কর ভ**ন্ম রাশি ॥ তরে মনঃ কেন মিছে ইতন্ততঃ চাও। ছাড়রে জীবন আশা বদি ভাল চাও। প্রিয়বাক্যে ও প্রিয়ে না কবে প্রিয়জন। তবে আর দেহ ভার কিবা প্রয়োজন। এ বেশ হতেছে এবে বেশ বিষধর। এই বেলা বিষধর ধরে বিষ ধর ॥ নেত্র রে অত্র কি মিছে করিতেছ দৃষ্টি। নবম সংখ্যার শমি দিতেছে রে দৃষ্টি॥ সধা দত্তা ফুল ভ্রাণ পাবেনারে নাসা। ভবে আর বাঁচা কেন হয়ে কর্মনাশা ॥ ब्रमभव ब्रम क्वांच ना करत खेरण। কেমনে জীবিত্ত ভাবে রবে ছে অবণ # শোন্তলো কুন্তল যদি হলি কালপাশ। তবে কেন না নওলো মোরে কান পাণ। হুদয় ভাণ্ডারে থাকিডেরে পরোদিধি। কই শোভা পার থাকিডেরে পরো নিধি # দন্তরে অন্তরে ছু: ধ বাড়িছে কেবল।
কালের করাল মুখে হৈল না কবল।
কেন রে ভাবনা কর কারে দিবা কর।
দাও কর তাঁরে বাঁর পিডা দিবাকর॥
এ রূপ আক্ষেপে ধরা লোটাইয়া ধনী।
শবাকার হয়ে করে হাহাকার ধনি॥
ক্ষণে মূল্ছা ক্ষণে জ্ঞান ক্ষণে উন্মাদিনী।
এ রূপে ক্ষণেক কাল হরে উন্মাদিনী॥
পারে আদ মৃত্যুরে মুড়ি ছুই করে।
পাঙ্রির চরণে ধরি নিদেদন করে॥

সভীর প্রশ্ন! পতির উত্তর।

সতী—একান্ত ত্যজিলে হে গুণনিধি।
পতি—কি করি প্রিয়সি বিধির বিধি
সতী—বিধির বিধি কি বাদী আপনি।
পতি—কি দোবেতে বাদী হইব ধনি ।
সতী—করিয়াছি কত দোব চরপে।
পতি—সতীর দোব কি পতিতে গণে ।
সতী—তবে কেন নাথ ত্যজ আমার।
পতি—জাত রূপিনী দেখে ভোষার ।
সতী—তবেত আপনি জাত স্থামী।
পতি—লে কি লো প্রিয়সী আদি কি আমি ।
সতী—আমি কি ছে আমি এ কোন ঠাট।
পতি—জাত্মতের এই প্রথম পাঠ।

गडी-बाखंड्य रम रम र कार। পতি—পরমাত্ম তত্ত্ব যাহাতে পার। সতী—পরমাত্মতত্ত্ব সে বা কি রূপ। পতি—সদত সাধনা ত্রন্ম স্বরূপ। সতী-বল হে ত্রন্মের কিবা আকার। পতি—নানা মতে হয় নানা প্রকার 🕯 নতী—তব মতে কি হে শুনিব তাই। পতি—নিরাকার ত্রন্ম দ্বিতীয় দাই। সতী--আমি বলি ব্ৰহ্ম দ্বিতীয় আছে। পতি—না বল ও কথা আমার কাছে। मजी-कि कथा कहिर रम ए छर्छ।। পতি—বল এক ব্ৰহ্ম স্ফিন্ন কৰ্তা। সতী—দম্পতি বিদে কি হ'বন হয়। পতি—ভাজ লোধনী ও মিছে সংশয়। সতী—বল বল কিসে ত্যজি সংশয়। পতि-मन्भेजी कर्माठ जिस्र मा इत्र । সতী—ভবে কি দম্পতি নহে প্রত্যেক। পতি—না লো রূপনি উভয়ে এক। সতী—ভবে ভাজ মোরে কি অভিপ্রার। পতি-গৃহী বিলে কেবা গৃহিণী চায়। मजी-बार्शन कि ग्री मार दि थी। পতি—কিসে সোরে গৃহী হতেছে জান। मजी-शृरहरू ब्रद्धक् क्रब्स् विद्य । পতি—বোৰন বলেতে হয়েছে প্রিয়ে।

সতী-এবে বশীভূত আছু হে কার। পতি—যার ইচ্ছা বশে জগঘাপার ॥ मजी-कांत्र हेक्ट्रा वर्ट्स जगद्यां शांत । পতি—যেই বেন্ধ এই বিশ্ব আধার। সতী—বল তিনি স্ত্ৰী কি পুক্ষ মণি। পতি—জ্যোতির্ময় ব্রহ্ম বেদের ধনি ॥ সতী—ভবেভ বেদই সর্ব্ব প্রধান। পতি—ভা দয় বেদেতে ব্ৰহ্মানুষ্ঠান ॥ সতী—বেদেতে ব্ৰহ্ম কি ব্ৰহ্মেতে বেদ। পতি—ক্রতি হতে প্রিয়ে হয়েছে বেদ। मजी-काजि हे जत्य इंहेल गृल। পতি—ও কেবল প্রিয়ে বুনিতে ভুল ॥ সভী-বুঝাও বুঝেছে বুঝি কি বোঝা। পতি—এ বোঝা বুঝিতে ছইবে বোঝা॥ সতী—বোঝা ৰলে বুঝি বোঝা হবে না। পতি-ক্ৰমল আধারে কভু সবে না গ সতী-না হয় আপনি ধরিবে ভার। পতি—ইহাতে প্রিয়ে কি লাভ ভোমার ॥ সতী-কৃহিব কেন হে না হলে লাভ। পতি—ভবে শুদ প্রিরে ইহার ভাব।

গদ্য। এই ৰূপ উভরে বাক বিতপ্তা হইতেছে এমত সময়ে সুদীর্ঘ পিঙ্গল কটাজালে রঞ্জিতা, শির কিরীট বিভূষিতা, ললাট ত্রিপুগু মণ্ডিতা, প্রদীপ্ত ছতাশন লোচনা, যোগপট ক্ষন বেফিতা ও জপমালা ত্রিশল গ্রহিত ভুত্বত্বর সমোপিতা এক নারিকা বিমানমার্গে অধিষ্ঠাত্রী হইরা সুধা যিক্ত শ্রবণ মনোহর বাকে কহিতেছেন।

(इ जनमोधतः । श्राप्त वह शृथिवीचः ममख वृध-গণেই নারী নিন্দনীয় জানালোকে বিভূষিত। অর্থাৎ যেসকল গ্রন্থে অকনা সক্ষ না করার প্রথা। স্ত্রীলোক তিরস্কৃত ব্যতীত ইহাদিনের এমত কি কোন জ্ঞানগর্ভ গ্রন্থ নাই যে তাহাতে ধর্মা, অর্থ, মোক্ষ, কাম প্রভৃতি প্ররচিত গাথা সকল গ্রথিত থাকে ? মুশ্ব মানবমগুলীর কি ভ্রম, ইহারা যোষিত দোষিত পুস্তকেই মস্তক বিক্রন্ন করিতে সামর্থবান হটপ্লাছেন। হার হার! কোন বিধারদ রমণীকে রাক্ষ্যী আখ্যা ব্যাখ্যা করিয়াছেন, কোন প্রাক্ত নারীকে পিশাচ বাচ রচিয়াছেন, কোন ভ্রমাত্মক ভীমাগণকে ভুজিনিমী সংজ্ঞা দিয়াছেন, কোন শাস্ত্র কার স্ত্রী ভাকার দ্বিপদ ব্যান্ত্রীৰূপা লিখিয়াছেন, কোন চেতবান চেতমৎস্ম ধারণের জাল স্বৰূপ। वित्राद्यन, दक्र वा क्यान द्वाक निर्सात्त्र विका প্রকটিত করিয়াছেল, কেই বা ধীর নীর শোষণের পুর্য্য ধার্য্য ভাবিয়াছেন, কেহ বা ভরবারি তরণের তরণী হরণের তর্জ তুল্য বলিয়াছেন, কেহবা মাংস পিও ও ক্লেদান্ত পথ বিশিষ্টা, কেহবা সুবেশ পুরুষ দুষ্ট্যা, ইত্যাদি কেহ বা স্ত্রীয়ংত্যক্তা জগৎ ত্যক্তং ইত্যাদি, কেহ বা শৃকর সঙ্কাশ, কেহ বা কামাই क्ष्मा, रक्ष्या (यानकना, रक्ष्या श्वानः नास्त्री-ত্যাদি, কেহ বা মোহজনিকা সুরা, কেহ বা নরকের क्षश्चान चात्र, (कह्वा कान्यापत मूल, (कह्वा गर्स-নালের আকর, ইত্যাদি ইত্যাদি যে যে মহাআর মনে উদয় হইয়াছে সেই সেই মহাজারা উক্ত কুল-বালা মহিলাদিগকে যৎপরোনান্তি তিরক্ষার করি-ষ্নাছেন। হায় হায় কামিনীগণ যে কি পদাৰ্থ তাহা উক্ত মূড়েরা কিছুই অবগতি নহেন।

পরার ।

কে করে কামিনী নিন্দে কে হেন পাতকী।

রমণী হইতে পুণা ধরেছ এত কি ।

নারী বলি অভাগিনী নর ভাগাধর।

ভবে কেন নারী জন্য নর সাজে বর ।

নববধু লোভে মত্ত বিক বিক বিক ।

মাধার মহুর লয়ে সাজরে কার্তিক ।

কোধাকার সূত তুনি সে বা কার সূতা।

তাহার কারণে কেন হাতে বাছ প্তা ।

মায়ের জানিতে দাসী বলিয়া গমন। ষানে যান জাঁতিজন্ত্র কোমরে বন্ধন । जरव वरल विका निमि वीमजाह बद्र ! সেমারপে বর্ষাত্র চলে যত নর ॥ সভায় মাইয়া শোভা ষেম প্রভাকর। মনে মনে কভক্ষণে ধরি প্রিয়া কর 🛭 এমল রমণী ধনে না পারি চিনিতে। কক্ষ বনেতে বাস যে নিন্দে বনিতে । অবনীতে শ্ববনিতে ব্ৰদেতে শোভা। দারা হারা বিপ্রস্ত গলারাম ভ্যোতা । योनव मामव (योश) मश किवा कव। সতী শোকে ধ্যান পর <mark>জ্ঞান</mark> পরভব # ধ্যান ভঙ্গ মাগ্নী লোভে পুন: উলে মতি। गित्रियत बांटम वत्रदबल्ध इटव गिष्ठ ॥ मात्री विना यूत्र महत्र माहि मच्यीनां । করেন শবিষা সিন্ধু বিষণু লক্ষী লাভ । হর উরুপরে গোরী খোডে কি সুন্দর। গজারে ধরিয়া শিরে লাম গজাধর ঃ मात्रांग्रन मल्डरक जूनमी जांद इस्म। কে হেন পাড়কী আছে করে নারী নিন্দে। শিব সহ অৱপূৰ্ণা মহাতীৰ্থ কাশী। काम कि जानकी गर जान बनवांगी है হর কোপানলে কাম ভন্ম হরে বার-রষণী রূপিণা রুডি বাঁচাইল ভার 🛚

इमाइन श्रीरम इट्स तका करते मछी। দাক্ষায়ণী ভাবে দক্ষে রক্ষিল প্রস্থতী 🛚 मात्री मन्त मात्री मन्त कि कत वाहिन। মরা পতি বাঁচাইল বেছলা নাচনী। নর শিব নারী শক্তি ব্যক্ত তন্ত্র মূলে। আ-মর পামর নর ভ্রমে যাও ভুলে। স্বজাতীয় বিজাতীয় আদি যত ভাষা। শ্বর হল ছুই শ্রেণী পণ্ডিতের ভাষা।। श्वत निना राख्यमत डेक्टांतन नारे। मह क्र माती हीत्म मत त्मार्ड छहि॥ স্বর শক্তি রূপা রামা মানবী মহিতে। ভ্রম হয়। ভ্রমে তারা মানবে মোহিতে।। এক মুখে নারী গুণ না পারি কহিতে। नाती निका रक्षांचार नाति तत महिए।। मात्री लात नत किया नत लात नाती। ममरमार्थमत्य यमि मी देशक विशोति ॥ জন শূন্য মহারণ্য হৈত এই বিশ্ব। विভू कान शई विम कि कतिक मृणी ॥ কে পঠিত ত্রুতি স্মৃতি কেবা লয় বিধি। (क इंडेफ माशितक किया विमार्गिमधि » क्या उक्रज़ार्गान । इस ब्रेमिख किला। घड़ा गांडू थोना नस क कतिड गोन । কে করিত ক্রিয়াকাও কে করাত ভাই কে ডাকিড ভট্টনিধি কে বলিড ধাই।

टक विशेष **७ भोषांट**ण ब्रह्मदक भोराजी । কে হরিত হ্যস্ত কে আছিত খোলা । क रहेड अधानि करो भक्तानि । কে করিত শালালেতে বড়া টানটোলি ॥ কে হইত পুরোহিত কেবা যজমান। **(करा किछ कारन मञ्ज क्या क्रिंड काम s** কে করিত বিভিন্তেদ কে করিত উম। কে ছাড়িত ব্ৰহ্মণাপ কে হইত ভশ্। (क जर्भ गांत्र**को (कवा नमः नमः क**त्र । কে করিত প্রশিপতি কে বলিত জর। क् बनिष निव निव क्वा वरन कानी। त्क बातिक करने श्री क्यांचानि । বাড়ী যুড়ি ঘড়ি ছড়ি কে করিত ভোগ। কে ভাকে নারীর নান কে নাবিড যোগ এ (क ब्रिक हुन कह क कहिक लोग। কে করিত গলা বাতা কে বালাভ বোল। त्व रहेज महाशानी त्व वृत्तिक गर्फि। कारक श्रव मा रहेक मोहीत तहारि । द्या विवि श्रेमांशीनि यक्ष क्षेत्र मेखे । क्की देशकं या श्वंदनक रूप अधिक बनिक किया जांगमा कि जीता ofte auf fen fun ani ling fri i प्रकार शोहन सह त्याद्व अस्ताती। enting as were taken the state

সাবিকী রাজসিকী ও ভাষসিকী রূপে। তিৰে লয় ভিন শক্তি নহামায়া কুপে॥ এরপে পুরুষ জার প্রকৃতি উভয়। অদাপি হজিছে জীবে নাছিক সংশর॥ ধর্ম অর্থ মোক কাম চতুর্বর্গ হেডু। শক্তি রূপা শোভে নারী ভববারি সেতু॥ ष्ठांत निष्प विजिश्म कंमिनी कंमिनी। कांगिनी कांगिनी नव कांगोनि गांगिनी । नाती नाती कत मिट्ट माती माती मत। নায়ক নায়িকা রূপে দর নারী ময় । রজনা সজনা হলে সলা কালাহাটি। जनना जनना देशक जन देशक मापि ॥ कूतक लोहमां नतं कूतक लोहमां। कूतरकटल कोश मृक्षि गरांच गांठमा ॥ यत्रांन श्रीमनी मटर यत्रांन शामिनी। मोजा त्ररक् करत वोज इश्टमत इश्जिमी ह तमनी अमनी मत तमन वार्गात । জরায়ু ভাতের হার মানব আধার 🛍 প্রকৃতি প্রকৃতি মন্ন মোহের কাণ্ডার। আকৃতি প্রকৃতি রূপে পুক্ষ ভাণার॥ क करत करती एक छेकत वर्गन। ना जारन गर्डच जीत ग्रम् वस्त । পতন উদাত এই ভার পুঞ্চি বত। बात जनरत्रादर केन विकि शाम छछ।

দ্রমণার পরোধরে কেনা হর সুষ্ধ। **બહरतत म्थर्न गूथ थिछरतत इस ।** নাগরীর ক্ষীণ দালা বসনেতে দেড়া। श्वरकत यम जम वाजरकत रवांका ह কে বলে কাৰিনী কর করী কর শৈতি। সন্তানে ব্লফিডে নেহ লক্তা মন:লোভা 🛭 मा प्रिच मा प्रारंथ गूथ व्य निरम व्यासिनी ह (माहिनी (माहिनी नव (माहिनी I নর নারী ভিন্ন নহে বলি ভার দত্তে। শিব শক্তি সংজ্ঞা ভিন্ন কারা ভিন্ন করে 🛭 যিনি হর ডিনি গোরী ভিনি শিব রাম। রাম সীডা রাধা কালী ভিন্ন ভিন্ন নাম 🛭 नर्ट जित्र भाग भागा समनी सनक। অৰ্দ্ধ অৰ্দ্ধ শোভে বেন ভালিনে চ্যক 🛭

গদ্য। হে জীবগণ! যিনি পরম্বপিতা পর-মেশ্বর তিনি সকলের কার ভাপ্তারের নিধি, যে ব্যক্তি যে ভাবে শুহাকে অর্জনা করে তিনি সে ব্যক্তিকে সেই ভাবেই কৃতকুতার্থ করেন কিন্তু জ্ঞা-নের তারতম্য জন্ত তাহার জ্যোতির কিছু তারতম্য হয়। যক্ত্রপ পাত্র বিশেষে, জলের ৰূপ ক্রপান্তর ও সুর্য্যের ভাবান্তর সর্ক্ত্রই হইরা থাকে জানিহ।

প্রার ৷

কেছ বলে পদতলে পড়িয়া কে, শব। কেছ বলে ভক্তলে দীড়ায়ে কেশব R क्ष्म वरम गरम मारम महाभित्र रात । क्ट बरम बम्बरम कोटा कि बोटांत ॥ : কেছ কলে জবা শোভা ও পায় কি পায়। কেই কহে ফুঞ্কোলি কে সঁপিল পায় 🛭 क्ह वर्तन कत त्यांनी विकिता कहानी। क्ट कटर बार्ड बद्ध मारियत कडालि ॥ क्ट् क्टन करित्र मौजिट्ड नीनकार। क्ट्र वाल आहीती आवित निम कांत्र ॥ क्ट वटल करत वांगा टेलकावश्य थेख । क्ट वटन करत योगो मख वश्म थेथे। (कह वटन **अहे मटन मिटि**वत टेखन्द । (क्ट् वर्तन श्रमि मांख त्रांशांन देतत्तव s क्ट्र बटल **जा कहे**द्रि मां-खंटे गां-खंटे। क्ष करह लाठि अहे रहे रहे रहे। क्ट् ब्रट्ट ब्रश्टकट्ड माहिट्ट वाजिमी। क्ट्कर वनगांक विज्ञास क्षिनी। क्ट बटल निर्भाषते मटक निर्भाषत । **क्ट्रवल शिकांबडी गई शीकांबड़** ड (कर करर की नेतांका किमित्रा किमेरी। (कर बात अरे बाद ल्यांकिटर किरणाती । কেছ কৰে কেশরীর পৃষ্ঠে কি শরীর। কেছ কছে এ শরীর সধা কিশোরীর 🤋 কেহ কহে এই মুর্গা মুর্গাসূরে লালে। কেহ বলে পুজনা গেলেন বন পালে # क्टिक्ट क्रामची क्र**क्टान**्त मरन । মেষে বধ করি ছরি দোলে কেছ বলে। क्ट राम-७३ वामा महीवमर्किनी। **क्ट्र वरन मधानूरत शांडिन व्यक्ति ।** क्ट्र करह धृज्यस्य वस्य धृमावजी। কেহ বলে অধাসুরে আখাতে এপিডি । **८कह करह हर्खमूरख बरख बोक्संत्रगी।** क्रिक्ट करह वकान्द्रत वर्ध मीलमणि क्ट वरन बक्तवीज भारत कि वांगारत । क्ष्ट्र वटल इति वध्मान्द्रद्रद्र वा मोदन । কেহ বলে শুস্ত বধ করে শস্তুদারা। (कह बटल कृष्ण करत कश्म ताल माता a কেহ বলে রাম রূপে বধিছে রাবণ। কেহ বলে অসিতা নাশিছে শতানন । **এই क्रथ क्रथ गव प्राप्त वांत वांत ।** কিন্তু ইহা নাহি ভানে এক নাত্ৰ সার । বুৱা এই জগতের যতেক ব্যাপার। শক্তির শক্তিতে সব হয় অনিবার । जरह नार् इंड नार्य कारन नंड दर्भ পান কর অতি আছু প্রিরা-মুখ-মধ্

আত্মতত্ত্ব শিখিতে যে আত্ম ভ্ৰান্তি ইও। আত্ম অহস্কারে বল কারে পর কও । আত্মতত্তে আত্মবত মন্যতে জগত। তেদ জ্ঞান নাহি তাতে সর্ব্ব আত্মবৎ 🛭 आर्वं अमन जार्ग शिष्ट्व अमारिन । करत्र धति वन अरना अमरत अमरत এ রূপ আকাশ-বাণী শুমিয়া দম্পতী। অবিলয়ে দেত্রপাত করে ব্যোম প্রতি # জ্যোতিশায় দেহ এক দেখিবারে পায়। উভয়ে সভয়ে নম করে তাঁর পায় 🛭 দেখিতে দেখিতে স্বীয় বদন প্রকাশে। শশী নিশি ভারা আদি অনারাসে গ্রাসে # অব্দেশ্যে আপুনার নাশের কারণ। ভানুতে মিশায়ে তনু ছায়া সংজ্ঞা হন 🛭 দেখিয়া আলেখ্য প্রায় রছে ছুই জন। এই প্রে হয়ে গেল প্রভাত বর্ণন।

প্ৰভাত বৰ্ণনা

উঠিল গৃহস্থ সব ছুটিল তক্ষর।
ফুটিল পদ্মিনী প্রেম লুটিল ভাক্ষর ।
কুমুদ আমোদ শ্বা মান রূপে ভাসে।
চক্র করে চক্রবাকী চক্রবাকে ভাবে ।
নট নট বিরহিণী বিরহী প্রহরী।
নিত্রিত নিম্মিতা হেরি বিগত শর্করী।

एक वटक विकार वरम मूज्यूमी। मदत्र विद्याल विद्याल स्थति । । পুফাতক শোভা খ্ন্য কুণ্ণ অনিকুল। খঞ্জ বিঞা দেখে হাসে চম্পক পাৰুল **গ** छातीतथी-जीत्र मद्म इत इत इत । শুনিয়া কম্পিড ভয়ে বিলুডকবর ॥ हम्मारत्व जन हम्म ग्राटत एति एति । अवरण खवरम मृष्ट्री जूनमी यूअही ॥ জবা আদি ভৰণতা সহ ভৰুনতা। তন্ত্ৰ মন্ত্ৰে যন্ত্ৰ পুঞ্চপ ভ্যাতে ভৰুনভা । भागमनी धवनो जानि यटङक (शांशांन । গোপাল সহিত গোঠে চলিল গোপাল # পথিমধ্যে যশোমতী আসিয়া তথনি। ধড়ার অঞ্চলে বান্ধে ক্ষীর সর ননী॥ ছুটিল যাঠেতে স্বীয় বৎস সহ ধেনু। ফিরাইছে কাতু সবে বাজাইয়া বেণু॥ এ রূপে বিপিনে ক্লুফ বাজান বাশরি। মধ্যে মধ্যে আছে তার এসো লো কিশোরী॥ ধাশিতে কিশোরী রব শুনিরা কেশরী। कृषिए देकनारम वरन अकिरक् भवती। ক্রভগানী সিংহ হেরি ছোটে দৃগ করী। সবে বলে জালো জালো জালো রে কেশরী। প্রভাতে প্রভাতে রবি আসিয়া আকাশে। সিংহ জয়ী জটাজাল কিয়ণে প্রকাশে !

ডাত্র কি সুবর্ণ বর্ণ শোভে দাহাসল। বোধ হয় পূৰ্কদিণ দহে দাবানল ॥ भुक्त बिर्ग भक्तिजीवि भागरभन्न भूक । প্ল পক্ষ কীট দক্ষি লভা পত্ৰ কুঞ্জ প্রাতঃস্থান করি সবে রক্তবন্ত্র পরি। কাঞ্চন লাঞ্চন আভা আহা মরি মরি 🛭 জ্যোতির্দায় জোতির্চ্চর জগতে বিভরে। जल भून रेमन भूना किवा नीका धरत ॥ রৰ্জ্জুভাবে জলাশয়ে শোভে যে কিরণ। যেৰ বারি ভোলে অর্গে বিদ্যাধরীগণ ! রবি ছবি জল মধ্যে শোভা করে ভট। Cate इत उंकिट्स अर्थमत अर्थमत अहि ॥ কেছ বলে প্ৰভা প্ৰভা ভা নয় ভা নয়। প্রাতঃস্থান করিছেন সুর্য্য মহাশয়। क्ट्र वर्तन शिम्रामीत अर्शामिए मान। विद्यू इत्ल अद्युख्त इस अधिकान ॥ क्ष वर्त विভावती गर निवाकत। পোপলে ভুঞ্জিলা রভি তৃষায় কাতর। প্রাতঃকালে পিপাসায় ক্লেশ কলেবরে। মুণাল অন্যাধে পুর্যমু প্রতি সরোবরে # এ রূপেতে পরস্পরে কহিতেছে অর্কে। मन्त्रज्ञे महिक इत्न अर्विशन उर्द ।

নাটক ৷

সতী ও সাধু এবং দাসীর কথোপকথন।

স অর্থ সতী, সা অর্থ সাধু, লা অর্থ দাসী।

স। ভর্ত্তে প্রবণ করিলেন জাহা! আকাশবাণী

যেন বিকাস বাণীর ন্যায় বোধ হইতেছে। গুণ্ডী
দেবী গুণ্ডভাবে তোমার লিগুভাব লুপ্ত বাসনায়.

শৃস্তভাগে সমালীন হইয়া অবলার অভূত পূর্ব্ব জত্র

যোগে মিত্রযোগের স্ত্রপাত করিলেন। হে

প্রবভা! আপনি জানদাতা হইয়া চিরাজ্রিতা শুল্জা
যরতা রমণীকে নিরাজ্রয়া করিয়া কি কল পরিগ্রহ
করিবেন, তাহা স্ত্রীজাতির মলিনা বৃদ্ধি জন্য ক্দরস্কম করিতে জক্ষম।

সা। প্রিরে! আকাশবাণী শুনিলাম তোমারি জয় জয়কার। তোমার প্রতি ভূতনাথ ভগবানই কুপাবান হইয়াছেন, ত্যাগ করা ঘটতেছে না।

मानीत अदिवन ।

স্থাগত। আং কি পাপ রাম রাম রাম, ভাল জালারে বাবু, কাল দিন হতে বকতে সুক্ল করেছে

রাত পুইরে গেল তবু ছাড়ান নাই। গলাঞ্চলে ক্ষতাঞ্জলিপুর্বক নিকটাবর্তী হইয়া উভয়কে প্রণতি পুরঃসর প্রকাশে, বলি আপনাদিগের কি কথা कांग्रेकिंगि कुतादव ना, निभि भिष इटला उत् रय কথার শেষ হয় না। বাপরে একি স্থারতো লো-কের। স্ত্রী পুরুষে একত্র হয়, তারা কি এমনি করেই রাত্তির জাগিয়া থাকে, না আহার না নিদ্রা না কিছু, মিছে মিছি প্রমেশ্বর ও কালী ও তুর্গা ও हिटका एएका नानान कथात्र कटलामत्र कि। काथा सूर्य थोरव (मरव, दनरव (थारव, शमरव (थनरव, দেখবে শুনবে, শোবে বসবে, এইত জানি, মাগো সারা রাতটে গেলো এট্টু যুম্বতেও কি ইচ্ছা হয় না ৷

সা। (স্বাগত) এমত সময়ে এ মহাপাপ কোথা হইতে উপস্থিত হইল। প্রকাশ্যে, ও দাসী কি বলিতেছ।

দা। বলিতেছি মাথা আর মুগু। সা। মাথা মুগু কি ক্লিয় ভিন্ন। দা। হাঁ, ভিন্ন ভিন্ন বই কি ? সা। সে কি প্রকার। দা। তবে শুন। মাথার ভার সর, মুগু ভার র,
মাথা সকলকে বহে,মুগুকে বহিতে হয়,জীবিত জবস্থায় মাথা কাটাগেলেই মুগু, এ জানটাও যদি
নাই, তবে কেন মিছে সারা রজনী বকাবকির ভার
বকাবকি করিতেছ এবং অবলা কুলরালা ঠাকুরাগীকে অকারণ নিশি জাগাইছ।

मा। अकांतरन कि कि र उसरम शादक।

দা। কারণত আর কিছুই দেখিতে পাই না, কেবল আপনার আগাই জাগাইবার কারণ, আপনি
ঘুমান দেখি, একণি কর্তৃ মাতাও নিদ্রিতা হইবেদ,
আপনি খাবেন না খেতে দেবেন না, দেখুন
মানের বেলা প্রায় অবসান হইতেছে, জার কি
বিলম্ব উচিত।

সা। দাসী আমার স্নান হইরাছে।

দা। হাঁ কল্য হরে থাকিবে বটে।

সা। না দাসী অদাই স্নান হইরাছে।

দা। হাঁ বটে বটে ঠাকুরাণীর পর্যন্ত আত্র বস্ত্র

এবং কোঁটারও হড়াছড়ি দেহিডেছি।

मा। मानी त्रस्य क्त्रिएक।

দা। প্রভো। স্থাপনি স্বয়ংই রহন্ত স্থাপনাকে স্থাবার স্থাপরের কি নাধ্য যে রহন্ত করে।

সা। দাসী তোমার বাক্য কৌশলে আমি অতি সম্ভোব লাভ করিলাম। (হাক্সবদনে) ডুমি ধন্যা ডুমি ধন্যা।

দা। আর জত বাহাল্যে আবিশ্যক নাই, অমু-মতি করুন্ অঙ্গে তৈলমর্দন দ্বারা হস্তের সফলতা সম্পাদন করি।

সা। সেবিকে বাস্তবিক জামার স্নান সমাধা হইরাছে।

দা। ত্যাগ করিলেই সমাধা।

সা। সে সমাধা নহে আমি ভোষার সভ্য কহি তেছি আমি রান করিরাছি।

দা। কোখার গো।

সা। জগদীপরের কল্পাবারিতে অবগাহন করিরাছি।

স। তত্তি আমাকে বাহা প্রভারণা করিতেছ ভাষা আমোদ জনক বটে, কিন্তু সেবিকাকে বাক-জালে অক্তিও করা কোন জনমই উচিত হইতে। পারে না।

না। প্রিয়ে। বে কি ভারি কি প্রতারণা করিলয়া

স। এমনইত বোধ হইতেছে।

সা। কিনে বোধ হইল।

স। আপনি কি ৰূপে জগদীপরের করুণা বারিতে অবগাহন করিলেন।

সা। আমি তদ্ধত চিত্তে, সেই চিত্ত বিকার বক্তিত জ্ঞানার্জ্জিত ধনে, একতান মনে চিন্তনেই তাঁহার করুণা বারিতে অবগাহন করিয়া পরম স-স্থোয় লাভ করিয়াছি।

স। সংখ! সেমন হইলে তারে কি, স্ত্রী বা
পুরুষ ইত্যাদি ভেদ জ্ঞান থাকে? কে তাজ্যা, কে
পুজ্যা, কে নাহ্য কে বাহ্যা, এজ্ঞান থাকিতে সেই
করুণাময়ের করুণা বারিতে অভিযিক্ত হইতে যুক্তি
যুক্ত নহে। দেখা যে জলে ভ্রম রূপ কুষ্ণির গভীর
ভাবে,ভেদজ্ঞান তরঙ্গ রূপে, চঞ্চলতা ঝটিকা ছলে
এবং সনাতন ধর্মা পরিপুরিত জ্ঞান পোতের মনঃ
লোক্ষর ছেদি, জুংরাসা হাক্ষর ভ্য়াবহ বেশে বিরাজন
মান রহিয়াছে, সে জলে অবগাহন করা কি সাধা
রণ জনগণের সাধ্যা।

সা। প্রিয়ে বাস্তবিক যাহা কহিলে সভাবটো । দা। স্থা! ভবু যে ভোমাদিগের ঠেশাঠেশি রেশা রেশির কথা ফুরায় না গা। স্নান হয়ে থাকে ভালই এক্ষণে যাহা হউক কিঞ্চিৎ আহারাদি করি-য়া উভয়ে নিদ্রা যাও।

সা। দাসী আমি আহার করিয়াছি।

ল। মহাশয় আহারতঐ স্লানের মত করি-যাছেন।

या। मार्गीशा

দ। ভোজন হয়েছে বটে, তাহাতেই পেটটি, উচু উচু দেখিতেছি এবং জৃম্ভা ছলে উদ্যারও উঠিতেছে।

স। সেবিকে তুমিও প্রভুর নিকট কিয়ৎক্ষণ তিন্টিলে নিম পেট অবধি উচ্চ ২ইয়া উঠিবে।

দ। ঠাকুরাণী সে ভার আপনার উপর সমপিত আছে, পদাকানন ব্যতিত দিবাকর কর সুশোভিত হয় না, মণির অন্তর্গত আকাশে স্থণ শলাকা
ন্যাতিত সূত্র কুরে সম্ভবে ! দেখ প্রায় ভোজন কাল
অতি বাহিত হইল, অনশন সত্ত্বে,ও বিনিদ্রা বিষয়ে
আপনাদিগের বিধুবদন বিরস ও শরীর অলসাত্রিত
হইয়াছে, এক্ষণে ভোজন শয়ন ভিন্ন আরকোন কা
বাই কর্ত্র কুর্ম বলিয়া পরিগণিত নহে। অনুমতি

ংইলে অনুষ্ঠানে অনুযোঘিনী হই। ওই দেখ ছুই প্রহর সময় জগত কি ৰূপ শোভা ধরিয়াছে।

हुई अश्त वर्गना ।

जिशनी। क्टर अकारण वीर्या, इहेरा अधि शिष्ठीया, নহাবীয়া সূচ্য নহাশ্য । নতে সহা কি অধৈষ্ঠা, কি রূপে হইবে ইন্তৰ্ফা ত্যাকাশে বিকাশে তাগ্নিময়। রৌদ নহে ধেন কদ, সর্মে আর্দ্রি ভন্ত ক্ষুদ্র, তপণের তাপেতে তাপিত। জুড়াইতে জলে যায়, জল উষ্ণ জল প্রায়, প্রচণ্ড মার্ভি দণ্ডে ভীত॥ ভার ভূমে পদপাত', शुरु यात्र श्रमणां छो. রক্ষ পাতা পাতালাতি মুখি। প্রিগণে স্থির পক্ষ, শাখী শাখা করে লক্ষ্ জন্তুরে হইষ্ তাতি গুঃথি॥ কিকাশোয় জান হত, তীব জন্ত যথা যত ছায়া লয় কায়। বক্ষা হেতু। মেলে ভারুমরুমরু, কুংনেলে ডলে তরু, কোথা হনু কোণা রাভ কেতু॥ বিপ্রহর এই বেলা, প্রাণ বাঁচা এই বেলা, करेटा बरलंद ज्ञाला जना।

শাকি শুক্ত অনুজন, তুণ রেপুফুল কল, জগতে কি আছে এ জঘন্য॥ কেহ বলে একি ছাখ, কপালে না হলে সুখ, কপাল পাত্রের পূর্ণ নাই। না পারি ভামিতে মরি, হরি হরি হরি হরি, জয় জয় হরি থেতে পাই॥ কেহ অর্থাশনোপারে, স্বর্ণাত থরে থরে, ভোজা দুৱা ভোজে মুখে ভাসে। কেছ আই শূন্য কায়ে, কুগ্ননে শূন্য চায়ে, বিধাতীয় কত ভাষ ভাষে॥ কেহ আচনন করে, কঞ্চিন ভূপার করে, কেছ করে ভাষল চক্রি। ্বার অঙ্গে নাহি দশি, প্রতি দিন একাদশী, হায়েরে বিধির বিভ্নন। কের স্থায় শ্রোপরে, পুত্র পান যন্ত্র করে, ৈ কেই ধুম্ম দেখে দশদিগ। লাক শ্যা অনুপ্ৰ, সক্তা ফুলশ্যা স্থ, ক্রে শ্রা পর ফেণ্রিক ॥ ফাফ শ্যা প্রাশ্ন, থেদে বলে ধরাশোন, সহে কি এখন অনশ্ন। क्ष्य ज्रा नारा नारत, मन्य सर्या ज्या स्ट्रा ত্ৰ মতে দশ**নে দশন**। (लहराज कार्फ नारे, कहराल कांहा थारे,

(क्ट्रांग कहें (इ लद्धा

স। দাসী এনি এখনও আহারের প্রণালিটি উত্তম রূপে অবগত আছেন। বিন্দু বিস্গৃও ভো-লেন নাই।

দা। ঈশ্বরী। যদি প্রভুর আহারাবশিষ্ট উ চ্চিষ্ট কিছু থাকে আপনি গ্রহণ করুণ,পরে আমিও প্রসাদ পাইয়া পৃথিবীকে নিরহন্দার নিস্পাপ ও নিরাশা ভাবে স্থিতি করি।

স। দাসী ভাল পরামর্শ করিয়াছ উত্থন বটে কিন্তু একপ ছইলে অন্য অন্য সাধুগণের উপায় কি ছইবে। যদি সমস্ত পাপ ও অহন্দারাদি আমরা পান ভোজন করি, তবে অবশাই অপরাপর সাধু-গণের অনাহারে প্রাণ যাইবার সম্ভাবনা।

সা। সাগত হে প্রমেশ্বর ইহার। অবোধ অবলা জাতি কিছুই বুণোনা। প্রকাশে তোমা-দিগের এ ভ্রম উপস্থিত হইল কেন /। অহন্ধারানি কোথাও কি রাশি করা আছে তা দেই রাশিটি খাইলেই সমস্ত শেষ হইয়া গেল। স্বস্থ কার মনেই পাণাদি বিরাজিত। সাধু মাত্রেই স্বীর স্বীয়াপাপাদি আহার করিয়া থাকে। ক্ষায় স্থানিছে কায়, নাছি ভাল লাগে কায়,
জল দেলো পুরিয়া করম ॥
কেহ বলে ওলো হাবি, এই দণ্ডে দণ্ড পাবি,
হবি শূন্য কার্ম থেতে নোষ!
কেহ বলে মলাবড়, মোলা ওড় কড় কড়,
পর্যুম্বিতে কেহ পরিভোষ ॥
কেহ কহে মুগ্র দালি, বেনাফুলি রামশালি,
নাখনে তপ্সান্মান্ত ভাজা।
কেহ বলে সোভাঞ্জন, আনার মন বঞ্জন,
মুস্রি বাহার প্রিয় প্রজা॥

मानीत छेकि।

প্রভোষ মধ্যাত্র কালিন ব্যাপারে মনঃযোগী। ইউন্

সা। সেবিকে মধ্যাত্ন ব্যাপার আমার সমা ধান হইয়াছে।

म। कि कर्म।

না। আমি জগদীশ্বরের করণা বারিতে অব-গাহন পূর্ককি ধর্মা বস্তারত দেহে অহঙ্কার কপে অন্ধ, ইন্দ্রিয় কপ ব্যঞ্জন, সহ আহার করিয়া বিষয় বাসনা কপ জল, পানান্তর স্বচ্ছন্দোদকে আচমন পুরঃসর পাপাদি তাস্মূল চর্কাণ করিতেছি। (कहराल शांटह (कांटल, गटल कि 9 निमरताहल, পল্ভার ডাল্লার কাছে কাঁদে।।

কেছ চাহে মাংস মৎস্য, কেছ জানে স্কুক্তি কৎস্য,

কেহ সম্বুকানি দশরেথ।

কেহ বলে মূলা ভাজ', ংগে হাড় ভাজা ভাজ', कि मार्का नो शुंदर गान्दिय॥

কেহ বলে কাঁচা কল', কাঁচা নয় পাকা কল', ङ्तिया मर्त्तार ७ मैं हि स्कृति ।

ভাহারে করেছ ভাজি, ভোষার মতম পাজি, কেবা আছে বল ওরে প্রণে॥

কেই কটে থাক থাক, যে রূপ হয়েছে পাক. পাক লাড়া নিয়া লব প্রাণ।

পাকাইতে मोल करि, विदृष्टि शोकांलि कुनि, इति हर इ भारति भरिजान ॥

आंग्रमात शिक भना, কেছ বলে তুলি গণা, অরপুণী কোথায় বা লাগে।

ভোৱে পেলে বিশ্বন্থ, সোণায় ব্লোয়ে হাত. পাঠিকা করিবে জাগে ভাগে॥

रहान भनी जालाजन, इत्य दल आलंभन, এ সময় লাগেনা হে ভাল।

আর না সহিতে পারি, আনিও পাচিকা নারী, তুমি যাঁতে প্রাণে বাস ভাল॥

কেহ বলে ভাত বাড়, প্রাণ করে ছাড় ছাড়, ছাড় ছাড় এবে রঙ্গ ভঙ্গ।

কেছ বলে অলহন, ভাল বাংসে মন মন, কেছ বলে কর সম্বরণ 🛊 (क्टरल नांहि बान, क्टरल प्रह क्रांच. কেহ বলে অভৈল,না থাই। কেহ বলে ছি ছি ভাই, একথা কহিতে নাই তৈল গুলা পেটের বালাই॥ কেছ আদি ভাডাতাড়ি, বলে ছুঁড়ি নাবা চাঙি ফেনে ভাতে থেতে ভাল বাসি। কি কাজ ব্যঞ্জন পাক, ক্ষুণা দেয় নাড়ি পাক, বারি কর যদি থাকে বাসি ॥ কেই কুহে ওতে ভার্তা, তোমার কারণ ভার-করিয়াছি আলু আর উচ্ছা। কেছ কছে চড় চড়ি, কেন রান্ধ পোড় বাড় বার্ত্তাক দঞ্জনে মম ইচ্ছা॥ কেহ কৰে আদা নাই, কেহ কহে সংখ্যাই, (कह राल गांथ शांनि लक्षा। কেছ বলে ভোৱে বলি, ভাললো পিয়াত কলি-কেই বলৈ ওলৌশিত শহা ॥

কেছ বলৈ ওল ফোলে, গোটোলাল গ্ওণেজ দণ্ডবত কচু ঘেচু মান।

বিষভোজী কন্যা যিনি, ইহাতে সন্তোষ তিতি। বাগা তেঁতুলেতে পরিত্রাণ ॥

কেছ বলে স্থূলে ভুল, অধন তারে ভেঁতুল, শেষ রক্ষা যাঁহার প্রসাদে। দা। প্রভো অহস্কারাদি দেহেতে না থাকিলে বুঝি সাধু হইতে পারে না।

স। তানা ২লে থাবে কিলো, অমন সুস্বাত্ত দ্ব্য কি কোথাও মিলে, যদি কোন সাধুর পাপাদি না থাকে স্কৃতরাং গেটের স্থালায় পাপ করে কেলে, দাসী পাপ বড় মিষ্টি।

দা। ঈশরী নেগ যেন সর্মগ্রাসী ইইও না,
কিঞ্চিৎ প্রসাদ যেন পাই। আমি পোড়া পাপ
মুখে পাপ কথন খাই নাই। সাগত আমি ইহাদিগকে স্নান আহার করাইতে আসিয়া আমার
অবধি স্নান আহার গেল যে, উদ্ধে নেত্রপাত কবিয়া দেখিতেছে।

স। দাসী বৎস হারা গাভীর ভায়ে কি লক্ষ করিতেছ।

দা। দেবি স্থান্তিৰ পলায়ন করিতেছেন ভাই দেখিতেছি।

मा। उन्नी धरत क्लमा।

স। মহাশয় মনোমোগ করিলে অবশাই ধরা পড়ে, ও কার্য্য ত্রী জাতির নহে।

ন। মুগপদ দেখিলে কি আর পলাতে পারে।

[64]

দা। পদ্মিনীর প্রেমের দায়েই পলায়ন করি-তেছে।

তা। স্থাবার পদ্মিনীকে দেখিবে কি কত লোক প্রেমদা পরিত্যাগ করিয়া পলাইতে উদ্যত হুইতেছে অধিক বলা বাস্কুল্য।

স। দাসী বেশ বলেছ বেশ বলেছ তোমার বাক চাতুরিতে চরিতার্থ হইয়া তোমাকে কণ্ঠ বি-মূক্ত হক্তহার পুরস্কার করিলাম গ্রহণ কর।

रैतकाल वर्गमा।

ত্রিপদী।

এরপ নাটক ছলে, রহেন বাক্য কৌশলে, ক্রুনে দিবা প্রায় অবসরা।

জগতের নর নারী, গুছের ব্যাপার সারি, দেহ কর্মে প্রসন্ন প্রসন্না॥

কেছ মাঠে মাজে গাড়ু কেছ ঘাটে ঘবে ,খা । ৩০ কেছ দন্তে মঞ্জন মাজিছে।

কেছ কেছ সরোবতে, সুখে সম্ভরণ করে,

শ্রশরে কেহ বা মজিছে॥

কেছ কেছ নিরাম্বরী, শোভিতেছে নিরাম্বরী, অম্বর সম্বরি নির্মানে।

মৃণাল নিন্দিত করে, বসন ঘর্ষণ করে, নির্মাল করিতে স্ববসনে॥

गृशील मह सुम्ब বন মধ্যে পদ্ম কর, বসন করিছে তাক্ষণ। মরি যেন বন মাকে, করি শিশু রণ সাজে, শুত্তে শুত্তে করিছে ঘর্ষণ। প্রবর্তী সলোবর, তার পয়ে পয়েপির, হয়ে ভাসে পরে পয়োপর। বে হেরে সে পরেদের, সেই নর পরেদের, प्रदम्शी नीटह एम इह ॥ स्ट मिनि शहरायत, अंगरनंत शहरायत, करित्रया क्यत छ्रं एत्रय। नरल किरद एकागच, देशल आन उक्तांगच, माही इव এবে कोशं दर्थ।। কুপনীরে নর্বী জাল, নরে ঘটাতে জঞ্জাল, ন্তন তুমি ফল আছে ভাসি। রতি ডোর করি ভর, মদন তাহে ধীবর, नाग्रक गोरनत অভिनानि॥ ङल्भाग्यमा धना, ংকী ভোষায় ধন্য, শেতে কত শত শত সতী।

নাজিত করিয়া কাষ, সজিতিত কে করে কায়,
লজিত হতেছে রত রতী ॥
বিজ্ঞিত হতেছে (এছ, গজিতিত কাহার দেছ,
গার্জিত হতেছে কেছ কোগে।
ভিজ্ঞিত কাহার অঙ্গ, অর্জিত কাহার সন্ধ,
হারজিত হতেছে স্বীয়বোগে।।

मक्ता दर्गा। श्रेष्ठा।

এই क्रांट्र मत माती च च वारन दानिम वानिमी হওয়ায় দিবাকর কর নিকর পরিহার পুরুষের প শ্চিমদিগ আলক্তযুক্ত করত অস্তাচলালয়ে যামিনী কামিনী সহ কাল যাপনে অভিলাম করিয়া ক্রমেই অদর্শন হইলেন। এমত সময়ে সন্ধ্যা মাতা পৃথি-বীতে পদার্পণ করিলেন। আজ্ঞাদি সকল বর্ণ বর্ণ হার ছারা ভাঁহার স্তুতি পাঠ করিতে লাগিলেন পদাদিবর্গে স্বাস্ত্র বর্গে বর্গিয় হইয়া স্বর্গ সূথে সুখাসিন হইল। ছিজগণে নিজ নিজ উদ্ভিজা রোহণে গগণে পক্ষ বিস্তার করিয়া উভ্ভীয়মনে হইল। পাদপ পুঞ্জে কীট পতল বিশিষ্ঠ হইয়া বিশিষ্ট শোভা ধারণ করিতে লাগিল। সঙ্খ ঘণ্টা মুদ্দ করতাল রবে ধরাতল কোলাংল কপিণী হইয়া উটিল। নিশানাথ কামিনী ও কুসমের সূত্র স্পদ দর্শনাশে, তারকা তারক মণ্যসায়ী হইয়া জগতে জ্যোতি জাল এয়োজিত করিতে লাগি-লেন। এমত সনয়ে এক প্রম হংস প্রম পিতঃ প্রমেশ্বরের নাম সংকীর্ত্তন করিতে করিতে গমন

[b¢]

করিতেছেন, তচ্চুবণে সাধুও সাধু পদ্মী এবং দাসী ঐ পরম হংসের পদ্যাত পদ্যাত অনুগামীও অমুগামিনী হইলেন।

পরম হংদের ব্জুতা।

গীত।
রাগিণী পুরবী। তাল আড়া ঠেকা।
তাঁরে তাব ওরে মনঃ।
ঘিলি মনের মনঃ।
ইন্সিয়েরি অগোচর, বিলি ব্যাপ্ত চরাচর, অচিন্তা
রচনা বিশ্ব যাহারি রচনা।
দিনি সর্বর মূলাধার, ভ্রময়ে নিরমে যাঁর, সর্বনা পবন
শলী মক্ষত্র তপন ।
লায় শাগ্র পাতঞ্জল, তাবিরে না পার ছল, অভাত
বেদান্ত অন্ত না জানে তাঁহার।
দীমাংসা সংসরাপন্ন, হরে করে ভর ডল, বাক্য
মনোতিত সকলেরি কারণ।

श्यांत्र ।

ও দন: এমন করে ত্রথা মর খাট।
তম বলি সুমন্ত্রণা হবি যদি খাটি।
গভ হোল কভ দিন গুণে দাও ঠিক।
তবের বাঙ্গারে হাবে যবে হবে ঠিক।

পাপ রাশি সহ নিছে হইতেছ ভারি। ভার হলে ভার ফেলে পলাইবে ভারি। এই বেলা মাপা জোকা স্থির হবে কবে। ওজন হইলে সত্য সবে সত্য কৰে॥ তুলে উঠে ভূলে যেন হৈওনা পাবাণ। मार्श वस इत्य यादव थाहित्ल शावां ।। श्टर मनः जुमि यनि इत्त ह्रहे मन। কেমনে সমান হবে তিনি এক মন।। ন্যহ্য মন চলে তথা না চলে শমন। শম্ন হইলে তুলে তুলিবে শ্যন ॥ মম ইচ্ছা বুৱা মন ভোমারে বুঝাই। ত্বরিতে সত্য ভরিতে করিতে বোঝাই॥ জ্ঞান কর্ণধার সেই ধর্মোর সাগরে। ব্যশিক্ষ ব্যপারে মন লাগরে লাগরে। ৰিভ গুণে চিত হালি করিয়া বন্ধ। तिशृद्ध पर्मन मार्ड क्र ममर्थन । ভক্তির পভাকা তুলে খুলে নাও ভরী। যাত্রা কর বলি চুর্গা 🕮 হরি 🕮 হরি 🛙 জয় ভক্তা জয় ঢোল বাজালে কাজারে। আয় সজে কে কে যাবি ভবের বাজারে ॥ কেন মিছে ঘুরে মর বাজারে বাজারে। আমার মতদ ভক্তি সাজারে সাজারে 🛭 क्न गिर्ह <u>मिट्ड क</u>्र तोषाटत तोषाटत । यां हे इल मिव क्र ब्रांकों व ब्रांकों व

অতি টাৰ ধারে চল মাঝারে মাঝারে। ওই দেধ বার ভরি হাজারে হাজারে । क्रे केका और जात (मर्कारत (मर्कारत । (मध (धम फुवि अमा तिकारित विकारित ॥ अहे (मशकूरां जांग कूष्टिल कू**हिल।** স্থির চিত্ত পালি দশু ক্রটিল ক্রটিল ॥ कुमसुनी आहि मिथ गुष्टिन गुष्टिन। পাপ ঢেউ ভরণীতে উঠিল উঠিল ॥ ঠুজন উজানে তরি ছুটিল ছুটিল। व्यक्तान कुञ्जीत दुति लुप्ति लुप्ति । মানা মাবা এরে মাজি ভরণী কুটিল। ভৰ হাটে ৰাভা বুনাি উঠিল উঠিল ॥ ওরে মন বলি শুন ভোরে এই শলা। श्रद्ध होल मां अ वाल एउटेश दांच माला ॥ अहे त्मथ **च**य क्!रहे क्हेरजरक शीम । যাটেতে ভিডায়ে তরী দাও হরি বোল। ঘাটে গিয়া ছরি বল কোন গোল শাই। হরি বল হরি বল হরি বল ভাই। পারামি থাকিলে বল কেবা ভারে পারে। অন্যাসে পার হয়ে চলে ৰায় পারে 🛭 নত্বা ভাবিয়া ময়ে এপাত্রর সেপারে। নাহি জানে কিবা ভিন্ন এপারে সেপারে : বাস্ত্ৰ ঘাটে 🕶ৰ হাটে ৰোনাই তুলিব। ব্দর বলিয়া ভরী আরি না খুলিব 🛭

খোল হাল খোল পাল আর ভয় কাকে।
বুবো দাও বুবো দাও বাঁর মাল তাঁকে।
আর খেন কোন কাজে কেহ নাহি ভাকে।
লয়ে ছুটি ছুট ছুটি কর ফাঁকে ফাঁকে এ
ভটপুটি ছুটা ছুটি সব রাথ ঢেকে।
নরিতে হবেনা আর মরা দলে খেকে।
কুফাদাস ভুতনাথ ঘোরে বলে ভেকে।
নুয়াল সাপের মনি সপিওনা ভেকে।

८६ भने।

বংস সহ সুত্র ভূপে এক রিপু নারী রূপে, কালের বদন কূপে, ছাসিতেই করে রক্ষ। राउ मक अक्रोशिंड. এক রিপু পশুপত্তি ষজ্ঞ সহু কি ছুর্গতি, কথনে বিদীর্ণ হয় বক্ষ। अवन श्रेक्यत्राम, এক মাত্র রিপ্র নাম. ক্ষত্রিকুলে হয়ে বাম, নিক্ষত্রি করিয়া ছিল ছুমি। छुत्र दिशू महोदल, কি করি কি করি বল, ছারালেম বৃদ্ধি বল, কেবল সম্বল মাত্র ভূমি।। সিমুতে বামেন সেতৃ ধারা ভব সি বু সেতু, ক্লাবণ নিধোন হেডু, ছুই রিপু জ্লীরাম লক্ষ্মণ। पूरे त्रिश्रं खजरारम, कामारे रहाई नारम, ষাইয়ঃ মথুরা এামে, ক্রিলেন কংসেরে নিধন। কোথায় গেল গৌরব, ছুই রিপু কুশি নব. রাম লক্ষ্মণাদি সব, ২ধিলেন করিয়া ধৃতিনি।

ह्य त्रिश्च महारत. কি করি কি করি বল. ভারালেম বৃদ্ধি বল, কেবল সহল মাত তুমি ঃ দাভাকৰ্ণ পদ্মাবভী. বিপ্ৰ ছলে ষতুপতি, তিন রিপু এক মতি, ছয়ে করে র্যকেতু নাশ। তিন রিপু যোগকরি. हकनत्राच्छ्रन हति, तिशो मधन नधनी, खनागिएस निन कान शीम । শক্তি জার সিংহ দর্প, তিন রিপু করি দর্প, মহিযাপুরের দর্প, করে চুর্ণ টলমল ভূমি। ह्य तिश्र महारत. কি করি কি করি বল. श्रामाग दृष्टि दल, (करल मधल गांक पूमि । कृर्याधन क्यांमन, শকুলি কর্ণ ছুজন, চারি রিপু করি পন, ধর্মরাজে পাশায় ছলিল। कांत्र शरन मस्त्र, क कि जी दोन लक्ष्मण. চারি রিপ্ত বিচক্ষণ, মহীরাবণের প্রাণ নিল। রান্সা রাণী গুরু পাত্র, এই চারি রিপু মাত্র, বধিতে প্রস্থাদ ছাত্র, কত রূপে করিল ছুফামি। **छ**ष्ठ विश्व महादल, কি করি কি করি বল. হারালাম বুলি বল, কেবল সম্বল মাত্র তুমি। ভাবয়ৰ সুত্ৰে বঞ্চে, গঞ্চরিপু ভুত পঞ্চে, श्लाहेर्द मध्येर, श्रीव मध्ये जुरन संस्थाता 9.00 রিপু পাত্রপুত্র, बराइ श्रमाद कृत, তুলিয়া বিবাদ সূত্র, ছুর্যোধনে করিল সংখার। নাহি হয় এক উসু, পঞ্চ রিপু পঞ্চ ভত্ত. जूलांबेल महामञ्ज, बलिवादि मा दिश स्थार्थि ।

কি করি কি করি বল, ছার রিপু মছাবল, ছারালার বৃদ্ধি বল, কেবল সম্বল সাত্তি ভূমি।

म्रोगिनी ननिछ। छान बाङ्गिर्टिका।

ভোষা বিনে ত্রিভুবনে বল হে কি আছে বিধি।
তুমি পাংশু তুমি ধূষর, তুমি মহা মূল্য নিবি ॥
তুমি রাত্র তুমি দিবা, ভোষা ভিন্ন আছে কিবা তুমি
জীবগণ নীভা, তুমি অন্ত তুমি আদি।
তুমি ছেন্ন তুমি গণ্য, তুমি পাপ তুমি পুণ্য, তুমি
পূর্ণ তুমি শুনা, তুমি মিত্র তুমি বাদি ॥
ক্ষমদাস গুড়ি হাত, বলে এহে তুত্রনাথ, সকলি
ভোষার হাত, তুমি প্রবিধি বায়বি।।

রাগিণী তৈর। তাল তেলেনা।
তব প্রাম দদে, পান আনোদে, বিহ্বল হইয়া পাড়িয়া
রই। বাহ জাল কিরে, চপ্তুতে মুপ্ত খোরে, দপ্তেথ
ভব নাম তুপ্তে লই।
ভব রস অহি ছেন, অহিক পানত্রিকে পান, ভব ভব
গুলিটেনে হই বম জই।

ক্ষর কলিকা পরে, তব কুপা গাঞা ভরে, বেদনে দুন দিয়ে নির্দ্য হই॥

ভব দয়া ডাড়ি, লয়ে স্থিত নাড়ি, ভক্তির গুড়ুকে নিযুক্ত হই।

ক্ষানাসে ভাষে, ভূতনাথ পাশে, ধূর্জাট গৃষ্ঠার বিশ্বি বা কই ঃ

मगांखः ।

